ओ३म्

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

(प्रश्नोत्तरी)

सत्यार्थप्रकाश
आर्याभिविनय
व्यवहारभानु
आर्योद्देश्य रत्नमाला
वेदांग प्रकाश
अद्वैतमत खण्डन
काशी-शास्त्रार्थ

संस्कार विधि
पंचमहायज्ञ विधि
गोकरुणानिधि
अनुभ्रमोच्छेदन
भ्रमोच्छेदन
वेदविरुद्धमतखण्डन
भागवत खण्डन

कु. कञ्चन आर्या

।। ओ३म् ।।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

(प्रश्नोत्तरी)

कञ्चन आर्या

(एम. ए. , एम. एड.)

-: प्रकाशक :-

वैदिक प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

प्रकाशक :
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0)
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 011-23360150, 23365959
टैलिफैक्स : 23343737 **Email : aryasabha@yahoo.com**
Website : www.delhisabha.com

लेखिका : कञ्चन आर्या

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित।

प्रथम संस्करण : सितम्बर, सन् 2010
सृष्टि संवत् : 1960853111
विक्रमी संवत् : 2067
दयानन्दाब्द : 187

प्रकाशन व्यवस्था : श्री सत्यपाल भाटिया

मूल्य : 30/ रुपये

कम्पोजिंग : अशोका कम्प्यूटर्स, मो. : 09990573505
लेजर टाइप सैटिंग : श्रीमहालक्ष्मी; : 9899651503
मुद्रक : राधा प्रेस; दिल्ली-31

अनुक्रम

क्र.सं.	क्या पढ़ें?	कहाँ पढ़ें?
क)	**फिर मुड़ें ऋषियों की ओर....** — आचार्य ब्र० राजसिंह आर्य	1
ख)	**सम्मति** — डॉ० स्वामी देवव्रत सरस्वती	9
ग)	**लेखकीय**	11
घ)	आभार अभिव्यक्ति	17
ङ)	**द्वे वचसी** — आचार्य आनन्द प्रकाश	19
1.	ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ	21
2.	सन्ध्या की पुस्तक	23
3.	ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	25
4.	ऋग्वेद एवं यजुर्वेद का भाष्य	27
5.	चतुर्वेद विषय सूची	29
6.	वेदभाष्य के दो नमूने	31
7.	सत्यार्थप्रकाश	34
8.	संस्कारविधि	39
9.	पंचमहायज्ञविधि	42
10.	आर्याभिविनय	43
11.	आर्योद्देश्यरत्नमाला	46
12.	व्यवहारभानु	47
13.	गोकरुणानिधि	49
14.	अद्वैतमत खण्डन	51
15.	वेदान्तिध्वान्त निवारण	53
16.	वेदविरुद्धमत खण्डन	55
17.	भागवत खण्डन	57

18. शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण 58

19. भ्रान्ति निवारण 60

20. भ्रमोच्छेदन 62

21. अनुभ्रमोच्छेदन 64

22. काशी शास्त्रार्थ 65

23. सत्यधर्म विचार या मेला चांदापुर 68

24. शास्त्रार्थ विषयक अन्य ग्रन्थ 71

25.–44. व्याकरण विषयक 20 ग्रन्थ 76

25.–38. वेदांग प्रकाश (14 भाग)

39. संस्कृत वाक्य प्रबोध

40. निरुक्त (मूल)

41.–44. अष्टाध्यायी भाष्य (4 अध्याय)

45. गोतम–अहल्या और इन्द्र–वृत्रासुर की सत्यकथा 81

46. गर्दभतापिनी उपनिषद् 83

47. आत्मचरित (स्वलिखित) एवं स्वकथित जीवनचरित 84

48. पूना प्रवचन (उपदेश मंजरी) 86

49. बम्बई प्रवचन 90

50. पत्र एवं विज्ञापन 92

51. महर्षि के अप्रकाशित ग्रन्थ 96

परिशिष्ट

I. पुस्तक में वर्णित ग्रन्थों की अकारादि क्रम से सूची 100

II. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची 102

III. सहायक ग्रन्थ सूची 103

फिर मुड़ें ऋषियों की ओर......

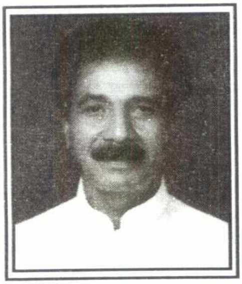

सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत पर्यन्त का काल वैदिक काल अथवा **'ऋषि युग'** कहलाता है। **'ऋषि'** शब्द का अर्थ है—**क्रान्तद्रष्टा (ऋषयः क्रान्तद्रष्टारः)**। आधुनिक भाषा में ऋषि को 'रिसर्च स्कालर' कहा जा सकता है।

आधुनिक रिसर्च स्कालर अथवा अनुसन्धानकर्ता जहाँ केवल प्रकृति से सम्बन्धित वस्तुओं पर अनुसन्धान करते हैं, वहीं हमारे पूर्वज ऋषि प्रकृति के साथ-साथ आत्मा और परमात्मा से सम्बन्धित तत्त्वों का अनुसन्धान भी करते थे। जहाँ आधुनिक अनुसन्धान कर्त्ताओं के सभी अनुसन्धान बाहर से होते हैं, वहीं ऋषियों के अनुसन्धान भीतर से होते थे। चूँकि आत्मा और परमात्मा बाहर के विषय नहीं हैं, उनकी खोज के लिए भीतर अर्थात् अन्तर्मुखी होना आवश्यक है, अतः ऋषि भीतर से ही अनुसन्धान करते थे। परमात्मा सर्वज्ञ है, प्रत्येक विषय को पूर्णतः जानता है (**तत्रानिरतिशयं सर्वज्ञबीजम्**—योग-दर्शन 1:25)। अतः इसके सान्निध्य से होने वाली ऋषियों की खोज भी पूर्ण होती थी। सबसे बड़ी बात यह है कि ये खोजें अथवा अनुसन्धान किसी एक देश अथवा समय तक सीमित न होकर सार्वकालिक और सार्वभौमिक होते थे। उदाहरण के लिए, ऋषियों ने अनुसन्धान करके बताया कि शरीर नाशवान् है, तो इसका स्वामी आत्मा नित्य, अविनाशी, निर्विकार आदि है। यह नियम एकदेशी नहीं, अपितु सार्वभौमिक है तथा सर्वदा सत्य है। अनेक कारणों से महाभारत काल के साथ-साथ ऋषि-युग समाप्त हो गया। वैदिक धर्म और वैदिक सिद्धान्तों का लोप होने लगा।

तथाकथित ब्राह्मण एवं विद्वान् मनमाने व मनघड़न्त ढंग से धर्म को मानने लग गये। बौद्ध व जैन धर्मों का उदय हुआ। इस्लाम संस्कृति ने भी जोर पकड़ा। तरह–तरह के मत–मतान्तर चल पड़े। पुराणों की रचना हुई और पौराणिक धर्म (मत कहना अधिक उचित है) का बोल–बाला हो गया। वैदिक संस्कृति का पूर्णतः लोप हो गया। लगभग 5000 वर्षों बाद महर्षि दयानन्द का आगमन हुआ, जिन्होंने प्रामाणिक ढंग से वेदों को अपौरुषेय सिद्ध कर दिखाया। वेदों से विमुखता को ही धर्म और संस्कृति के पतन का प्रमुख कारण बताते हुए उन्होंने पुनः वेदों एवं वैदिक धर्म और संस्कृति की ओर मुड़ने के लिए मानो क्रान्तिकारी आन्दोलन छेड़ दिया। वैदिक ज्ञान को ही सभी प्रकार की उन्नति (सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक उन्नति) का मूल मानते हुए उन्होंने जन–जन को वैदिक धर्म का आचरण करने के लिए आह्वान किया। इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने जीवन को झोंक दिया और वेद सम्मत साहित्य की रचना में जुट गये। क्योंकि दयानन्द भली प्रकार जानते थे कि:—

"अन्धकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं।
मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं॥"

साहित्य के साथ सत्साहित्य का लेखन एवं प्रकाशन पूर्व जन्मकृत पुण्य कर्मों का परिणाम ही है। महर्षि ने **ऋग्वेदादि–भाष्यभूमिका, सत्यार्थप्रकाश**, वेदों का **आर्ष पद्धति** के अनुसार भाष्य, **संस्कारविधि** आदि अनेकानेक ग्रन्थों की रचना की, जिससे जन साधारण वैदिक दृष्टिकोण से अवगत हो सके। इन ग्रन्थों को सुलभ और सरल बनाने के लिए महर्षि ने बुद्धिपूर्वक, सटीक, वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत युक्तियाँ प्रस्तुत की हैं। महर्षि की शैली प्रायः प्रश्नोत्तरात्मक है, जिससे सर्वसाधारण की शंकाओं का समाधान भी सरलतापूर्वक हो जाता है।

इस प्रकार, वैदिक वाङ्मय एवं वैदिक विचारधारा को

सर्वसाधारण तक पहुँचाने के लिए महर्षि ने प्रयास किया। अमर हुतात्मा पं. लेखराम जी का अमर वाक्य— **'तहरीर और तकरीर' का काम आर्यसमाज से बन्द नहीं होना चाहिए'**, यही सन्देश देता है। परन्तु हम लोग इसका पूर्ण लाभ नहीं उठा पा रहे। महर्षि रचित इन ग्रन्थों के पठन–पाठन के प्रति हम लोगों की रुचि नहीं बढ़ रही, विशेष रूप से युवा वर्ग तो इस ओर से प्राय: विमुख हो रहा है।

बहिन कञ्चन ने यह एक स्तुत्य प्रयास किया है कि जिससे आबालवृद्ध (बालकों से लेकर वृद्धों तक) की रुचि महर्षि के ग्रन्थों के प्रति बढ़े। इस पुस्तक में गंभीर विषयों को भी प्रश्नोत्तर एवं सरल भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, जिससे जन साधारण को महर्षि द्वारा रचित ग्रन्थों का परिचय तो प्राप्त हो सके। इस छोटी सी पुस्तक में प्रश्न–उत्तरों के माध्यम से ही ऋषि के प्रत्येक **ग्रन्थ के विषय, उद्‌देश्य, अध्याय, रचना काल** आदि सामान्य तथ्यों को बताया गया है। इसकी सहायता से छोटे से लेकर बड़े तक अपनी रुचि एवं जिज्ञासा के अनुसार ऋषि के ग्रन्थों का अध्ययन करने का प्रयास करेंगे, ऐसी मेरी मान्यता है। जिसने ऋषि के ग्रन्थों को आद्योपान्त पढ़ लिया, उसे **वह पारस मणि पत्थर हाथ लग जाएगा, जो लोहे को स्वर्ण में परिवर्तित कर देता है।** अज्ञान के अन्धकार में डूबे लोग **वे चाबी प्राप्त करेंगे, जिसकी सहायता से उनके लिए शुद्ध व सत्य ज्ञान का द्वार खुल जायेगा।** मेरे विचार में, इस पुस्तक के अध्ययन से बच्चों, नौजवानों, गृहस्थियों, यहाँ तक कि वानप्रस्थियों को भी ऋषि दयानन्द व उनके ग्रन्थों के प्रति रुचि बढ़ेगी। और ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन करने से उन्हें ज्ञान का भण्डार प्राप्त होगा, उनकी चिन्तन शक्ति बढ़ेगी, **अन्धविश्वासों और पाखण्डों से छुटकारा होकर** उनमें अद्‌भुत शक्ति का संचार होगा।

इसके अतिरिक्त, प्रस्तुत पुस्तक '**महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)**' के पठन से ऋषि के सुरक्षित, परन्तु अप्रकाशित ग्रन्थों को प्रकाशित कराने की प्रेरणा भी मिल सकती है। मेरे विचार से यह पुस्तक सभी विद्यालयों में विद्यार्थियों को नियमित रूप से पढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम में रखने योग्य है। इसमें विद्यार्थियों की परीक्षा होनी चाहिए। पुस्तक के प्रश्नोत्तरों के आधार पर क्विज़ जैसी प्रतियोगिताएँ, संवाद एवं प्रतिस्पर्धाएँ आयोजित की जा सकती हैं। इससे छात्रों में रुचि उत्पन्न होगी और महर्षि के ग्रन्थों का स्वाध्याय करने की प्रेरणा प्राप्त होगी।

पुस्तक की उपयोगिता को देखते हुए ही दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा इसे प्रकाशित कर रही है। इस पुस्तक से बहिन कञ्चन की लेखन में निपुणता और ऋषि के प्रति अगाध श्रद्धा उजागर होती है। उनके गहन चिन्तन और स्वाध्याय का भी पता चलता है। परमपिता परमेश्वर उन्हें स्वास्थ्य प्रदान करें और वे जीवन के अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो सकें, ऐसी प्रार्थना व शुभ कामना है।

— आचार्य ब्र. राजसिंह आर्य
प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सम्मति

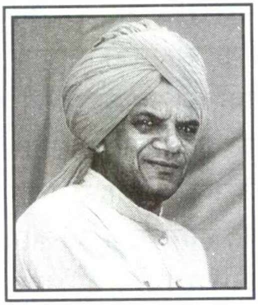

जो संस्था अपने प्रवर्तक के सिद्धान्तों से पूर्णतया परिचित होकर तदनुसार उन्हें अपने जीवन में क्रियान्वित नहीं करती, धीरे-धीरे वह रसातल की ओर चली जाती है। जहाँ अन्य मतों के अनुयायी उनके संस्थापकों के सामान्य सिद्धान्तों का जोर-शोर से प्रचार-प्रसार करने में लगे हुए हैं, वहाँ महर्षि दयानन्द के शिष्यों में इस उत्साह की कमी ही देखी जा सकती है, जो चिन्ता का विषय है।

महाभारत काल के पश्चात् महर्षि स्वामी दयानन्द ही ऐसे व्यक्तित्व के धनी हैं, जिनमें श्रीराम जैसी मर्यादा, श्रीकृष्ण के समान नीति, पाणिनि के समान शब्द-शास्त्र का पाण्डित्य, महर्षि पतञ्जलि जैसा योग-चिन्तन और आदि शंकराचार्य जैसी शास्त्रार्थ करने की वाक्पटुता एक साथ देखी जा सकती है, जिनके तर्क-तीरों ने उस समय के धर्म-ध्वजियों के होश उड़ा दिये। अपने इतिहास को भूली हुई आर्य-जाति ने सत्य-सूर्य के पुनः दर्शन किये। 19वीं शताब्दी में **महर्षि दयानन्द** और **कार्ल मार्क्स** – ये दो सुप्रसिद्ध चिन्तक माने गये हैं। जहाँ कार्ल मार्क्स ने अधूरा आर्थिक चिन्तन किया, वहाँ महर्षि दयानन्द ने मानव-जीवन के पुरुषार्थ-चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) का समग्र जीवन-दर्शन आर्य जाति के समक्ष प्रस्तुत किया। अन्य धर्मावलम्बियों द्वारा **'जंगली गडरियों के गीत'** कहे जाने वाले वेद-समुद्र का अवगाहन कर महर्षि ने उनमें से अमूल्य रत्न निकाल कर लोगों को पुनः वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया

और इसी आधार पर साहित्य की रचना करके वे हमें अमूल्य मोती सौंप गये।

बहिन कञ्चन जी ने ऋषि के उपकारों से उऋण होने के लिए **'महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)'** का प्रणयन किया है, जिसमें ऋषि के समस्त वाङ्मय का संक्षेप में परिचय देकर गागर में सागर भर दिया है। इस पुस्तक को पढ़कर पाठक सहज में ही महर्षि के प्रत्येक ग्रन्थ के मुख्य उद्देश्य, उसकी मुख्य विशेषताओं, ग्रन्थ का प्रमुख विषय एवं उसकी भाषा, उसका रचना-काल आदि से भली-भाँति परिचित हो सकता है। यह पुस्तक **गुरुकुलों के विद्यार्थियों**, **अनुसन्धानकर्ताओं** एवं **ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का स्वाध्याय करने वालों के लिए बहुत उपयोगी है।** इस प्रयास के लिए वे प्रशंसा एवं बधाई की पात्र हैं। इसके लिए उन्हें शुभ कामनाएँ।

— डॉ० स्वामी देवव्रत सरस्वती

संचालक

सार्वदेशिक आर्य वीर दल

लेखकीय

विश्व में समय-समय पर महान् आत्माओं का अवतरण होता ही रहता है। इस दृष्टि से भारत देश विशेष रूप से धनी रहा है। मध्य काल में, विशेषतः 19वीं सदी में तो अनेक महापुरुषों का भारत में आगमन हुआ। इनके माध्यम से सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक — इन सभी क्षेत्रों में क्रान्तियाँ हुई। इन सभी महापुरुषों में अनेक समानताएँ होते हुए भी अपनी-अपनी विशिष्टताएँ थीं। किसी भी व्यक्ति की विशिष्टताओं को जानने के लिए उसकी सामाजिक एवं आध्यात्मिक विचारधारा से अवगत होना अत्यावश्यक है और इसका प्रमुख साधन है—उसकी लेखनी (विशेषकर उसकी अनुपस्थिति में)। दूसरे शब्दों में, किसी भी व्यक्ति की लेखनी अथवा रचनाओं में उसकी विचारधारा बरबस रूप से प्रकट हो ही जाती है। यही कारण है कि हमारे ऋषियों और शास्त्रों ने 'स्वाध्याय' को मानव-जीवन के लिए अत्युपयोगी और अभिन्न अंग स्वीकार किया है— **'स्वाध्यायान्मा प्रमदः'**, **'स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्'** (तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली : 11, अनुवाक् : 1); **'शौचसन्तोषतपः-स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः'** (योग-दर्शन 2/32), **'तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः'** (योग-दर्शन 2/1)। किसी भी पुस्तक का स्वाध्याय हमें उस पुस्तक के रचयिता की संगति प्रदान करके उसके विचारों से अवगत कराता तथा प्रभावित करता है।

इस सन्दर्भ में, मध्यकालीन महापुरुषों में युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का अवतरण अपनी विशिष्टता को प्रकट करता है। अनेक प्रकार के अन्धविश्वासों, पाखण्डों, अन्ध परम्पराओं, सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों और विधर्मियों की

कुचालों से परिवेष्टित मृतप्राय: समाज और धर्म को पुनर्जीवित करने वाले इस अद्वितीय कर्मठ महापुरुष को समसामयिक विद्वानों, धार्मिक नेताओं, पण्डों, पुजारियों और तथाकथित ब्राह्मणों का जितना विरोध सहन करना पड़ा, उतना सम्भवत: किसी भी महापुरुष ने सहन नहीं किया होगा। इसका कारण था—**सत्य के साथ असत्य एवं पाखण्ड का किसी भी प्रकार समझौता न करना।** सत्य की खोज करते-करते जहाँ अन्य महापुरुष मूल की ओर मुड़ते हुए मध्य में ही अपनी यात्रा स्थगित कर गये (कोई दर्शन-ग्रन्थों तक, कोई गीता तक, तो कोई पुराणों तक), वहीं महर्षि दयानन्द की यात्रा सत्य के मूलस्रोत वेदों तक जाकर थमी। इसीलिए तो आर्यसमाज के प्रथम और तृतीय नियमों द्वारा उन्होंने घोषणा कर दी, **"सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।"** तथा **"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"** और इसी को सिद्ध करने के लिए महर्षि ने किसी भी स्वार्थ की चिन्ता न करते हुए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

महर्षि द्वारा प्रतिपादित सभी सामाजिक, आध्यात्मिक एवं राजनैतिक नियम व सिद्धान्त वेद पर आधारित थे। वेद से इतर कोई भी बात उन्हें मान्य न थी। उनके द्वारा प्रतिपादित सभी नियमों और सिद्धान्तों की कसौटी वेद एवं वेदानुकूल ग्रन्थ ही थे, क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान वेद ही उनके लिए स्वत: प्रमाण थे। यही कारण है कि महर्षि द्वारा रचित सम्पूर्ण साहित्य की '**धुरी**' केवल वेद हैं। उनके द्वारा रचित ग्रन्थ चाहे आध्यात्मिक हों, चाहे धार्मिक, चाहे सामाजिक, चाहे लौकिक अथवा राजनैतिक—सभी वैदिक मान्यताओं से ही ओत-प्रोत हैं। चूंकि सभी प्रकार की विद्या एवं ज्ञान का मूल स्रोत वेद ही हैं, अत: उनके ग्रन्थों को भी वेदों से पृथक् नहीं देखा जा सकता, ऐसा मेरा विचार है।

वैदिक संस्कृति, वैदिक सभ्यता, वैदिक संस्कार, वैदिक धर्म, वैदिक समाज, वैदिक राजनीति—यही सब स्थापित करना तो महर्षि की मंशा थी। जैसा कि '**स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश**' के प्रारम्भ में ही महर्षि लिखते हैं, *"अब जो वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं, जिनको कि मैं भी मानता हूँ, सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूँ। .... मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है।"* भारत देश का जहाँ यह सौभाग्य रहा कि '**वेदाँ (वेदों) वाले दयानन्द**' ने आकर यहाँ के समाज, धर्म और राजनीति का मुख वेदों की ओर मोड़ा, वहाँ यह प्रबल दुर्भाग्य भी रहा कि असमय में, जबकि महर्षि द्वारा चतुर्वेद भाष्य भी पूरा नहीं हो पाया था, उनकी जीवनलीला समाप्त कर दी गई।

इससे भी बड़ा दुर्भाग्य यह प्रतीत हो रहा है कि जिन अन्धगर्तों, अन्धकूपों और खाइयों में गिरी सभ्यता को अपने अमूल्य जीवन की बलि देकर महर्षि ने ऊपर उठाया था, वही सभ्यता पुनः उससे भी अधिक अन्ध पाखण्डों और अन्ध विश्वासों के कूपों में औंधे मुँह गिरती चली जा रही है। परम्परागत आर्यसमाजी तो आर्यसमाज में जाकर पुरानी रीति चला रहे हैं, परन्तु आज आवश्यकता है–युवापीढ़ी और बालवर्ग में सत्य विचारधारा के प्रचार–प्रसार की। इसके लिए ऋषिकृत ग्रन्थों का स्वाध्याय, मनन एवं निदिध्यासन करके तदनुसार आचरण करना परम आवश्यक है। आर्यसमाज से सम्बन्धित विद्यालयों, शिविरों एवं सत्संगों में विविध आयुवर्ग तथा रुचि के अनुसार जन–जन को इन ग्रन्थों का पठन–पाठन कराके वैदिक सिद्धान्तों से अवगत कराना भी हमारा मुख्य कर्त्तव्य बन जाता है।

विज्ञान, भौतिकता और प्रतिस्पर्धा के इस युग में इस प्रकार के ग्रन्थों का पठन–पाठन बच्चों के लिए भारस्वरूप एवं अरुचिकर

प्रतीत हो सकता है। अतः इन्हें रुचिकर रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक कर्त्तव्य बन जाता है। इस तथ्य को दृष्टि में रखते हुए यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि सर्वप्रथम तो हमें महर्षि द्वारा रचित ग्रन्थों का ज्ञान होना चाहिए। मुझे तो लगता है कि सर्वसाधारण आर्यसमाजी तो क्या हमारे कुछ मूर्धन्य नेता एवं प्रचारक भी महर्षि कृत सम्पूर्ण साहित्य का ज्ञान नहीं रखते। अतः इस कड़ी में यह प्रथम लघु प्रयास किया गया है, जिससे सभी महर्षि द्वारा रचित ग्रन्थों का परिचय तो प्राप्त कर सकें। विषय-वस्तु को, विशेष रूप से विद्यार्थियों एवं शिविरार्थियों के लिए सरल एवं रुचिकर बनाने के लिए, प्रश्नोत्तर के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इस विधा से क्विज़ व प्रतिस्पर्धाएँ तैयार करवाकर छोटी आयु वर्ग के बालकों को भी सरलतापूर्वक इन ग्रन्थों का परिचय प्राप्त कराया जा सकता है। इससे सभी प्रकार के बौद्धिक स्तर एवं योग्यता वाले लोगों में इन ग्रन्थों के पठन-पाठन के प्रति रुचि उत्पन्न होने में सहायता मिलेगी। भविष्य में, इसी प्रकार ऋषि के प्रत्येक ग्रन्थ के विभिन्न विषयों को भी प्रश्नोत्तर एवं संवाद के माध्यम से प्रस्तुत करके उन्हें मनोरंजक, सरल एवं सुबोध बनाया जा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक में ऋषि दयानन्द जी के ग्रन्थों का सामान्य परिचय मात्र (जिसमें **ग्रन्थ का उद्देश्य, विषय, भाषा, रचनाकाल, अध्यायों की संख्या, संकेत रूप में उपयोगिता आदि शामिल हैं)** दिया जा रहा है। सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि आदि ग्रन्थों के विभिन्न संस्करणों, उनमें परिवर्तन, संशोधन, विवादास्पद शंकाओं आदि को नहीं छुआ गया है। क्योंकि पुस्तक लिखने का उद्देश्य इन ग्रन्थों के पठन-पाठन में रुचि उत्पन्न करना है, न कि इतिहास को बताना ।

यदि कोई अनुसन्धानकर्ता अथवा जिज्ञासु इनके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, तो वे कृपया आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान् स्व० पं० युधिष्ठिर मीमांसक जी द्वारा रचित **'ऋषि**

दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास' (प्रकाशक— रामलाल कपूर ट्रस्ट) अवश्य पढ़ें। इस ग्रन्थ में महर्षि की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों, परोपकारिणी सभा—अजमेर में सुरक्षित एवं असुरक्षित प्रतिलिपियों, अमुद्रित ग्रन्थों आदि सभी तथ्यों के बारे में सामान्य जानकारी प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त, **'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन'**—चार भाग (प्रकाशक— रामलाल कपूर ट्रस्ट) को पढ़ने से भी उपर्युक्त तथ्यों के साथ-साथ अनेक अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियां भी प्राप्त की जा सकती हैं। ऋषि के ग्रन्थों का जहाँ-जहाँ से मुद्रण एवं प्रकाशन होता था, वहाँ जाकर परिश्रमपूर्वक खोजबीन करने से भी लुप्त हुए कुछ साहित्य-रत्नों की प्राप्ति की सम्भावना हो सकती है।

प्रस्तुत पुस्तक में ग्रन्थों के परिचय का क्रम विषय की महत्ता के अनुसार व्यवस्थित किया गया है और समान विषयवस्तु वाले ग्रन्थों को एक साथ दे दिया गया है। महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों से उद्धृत शब्दों को **तिरछे टाइप** यानी **इटैलिक्स** में दिया जा रहा है। विस्तृत व गहन जानकारी के इच्छुक प्रबुद्ध पाठकों के लिए **'सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची'** भी दी जा रही है।

अन्त में, पाठकों से निवेदन है कि मैं न तो कोई विदुषी हूँ और न ही लेखिका। केवल ऋषि दयानन्द और वैदिक सिद्धान्तों के प्रति अटूट श्रद्धा ने ही लेखनी को प्रेरित किया है। यही मेरी ऋषि दयानन्द के 125वें निर्वाण वर्ष के समापन के अवसर पर उनके चरणों में श्रद्धाञ्जलि है। इस पुस्तक के पठन से यदि कुछ युवक-युवतियों और बालक-बालिकाओं में भी ऋषिकृत ग्रन्थों और वेदों के अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न होती है, तो मेरा यह प्रयास सार्थक होगा। इस पुस्तक के आधार पर, आर्य पाठशालाओं, आर्य समाज में आने वाली युवा-पीढ़ी, गुरुकुलों आदि के द्वारा तो विशेष रूप से प्रतियोगिताएँ, क्विज़ आदि आयोजित किये जायेंगे, ऐसी मेरी आशा है। ज्ञानस्वरूप ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि

अज्ञान, पाखण्ड एवं अन्धविश्वासों को दूर करके वे सबके हृदयों में शुद्ध ज्ञान का प्रकाश करें।

पुस्तक के लेखन में त्रुटियाँ और कमियाँ होना सम्भव है। उनसे अवगत कराने का कष्ट करें, परन्तु साथ में ही भाव और तात्पर्य को अवश्य ग्रहण करें। यदि कोई सुझाव देना चाहें, तो स्वागत है।

"इदं नमः ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः।"

(ऋग्० 10/14/15)

कञ्चन आर्या

आभार-अभिव्यक्ति

सर्वप्रथम, मैं गुरुओं के भी गुरु आदिगुरु **(स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्**—योग-दर्शन 1:26), ज्ञान के भण्डार, सर्वज्ञ, ज्ञानप्रकाशक **सविता देव** का धन्यवाद करती हूँ, जिनकी अन्त:प्रेरणा एवं प्रदान की गई सामर्थ्य से यह लेखन कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

इसके पश्चात् उन सभी विद्वानों, मित्रों एवं सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ, जिनके प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग से यह कार्य पूर्ण हो सका। **आचार्य आनन्दप्रकाश जी, आचार्य अर्जुनदेव वर्णी, बहिन श्रीमती सुनीति आर्या, कैलाश चन्द्र जी, आचार्य श्री हरिप्रसाद जी एवं डॉ. नरेन्द्र कुमार** जी की विशेष रूप से आभारी हूँ, जिन्होंने शंकाओं का समाधान करके अमूल्य मार्ग-दर्शन किया। आचार्य आनन्द प्रकाश जी (व्याकरण-निरुक्त- दर्शनाचार्य, वेदवागीश, आर्ष शोध संस्थान, अलियाबाद) ने तो अत्यधिक व्यस्तता में भी दूरभाष के द्वारा समय देकर पूरा मार्गदर्शन किया। उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ। इसी प्रकार, भाई कैलाश चन्द्र जी (एम.ए. , एम.फिल्-स्वर्णपदक प्राप्त) सम्प्रति दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में शोध छात्र, ने भी इस पुस्तक के लेखन एवं प्रूफ संशोधन में बहुत सहयोग प्रदान किया। समय-समय पर उनसे मार्ग-दर्शन प्राप्त होता रहा। परमेश प्रभु से प्रार्थना है कि वे उन्हें जीवन में सभी प्रकार के लौकिक एवं पारलौकिक सुख प्रदान करें।

पुस्तक की प्रेस कॉपी तैयार करने में **श्री दयानन्द अर्पण जी** (एम.ए., एम.आई. आई. ई. न्यूमरोलोजिस्ट) ने अपना पूरा सहयोग प्रदान किया। अस्वस्थता के कारण मेरे लिए बाहर जाना

सम्भव नहीं था, परन्तु उन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इस कार्य को सहर्ष सम्पन्न किया। परमपिता परमेश्वर उन्हें अपने जीवन की लक्ष्य पूर्ति में सहायता करें।

इसके पश्चात् मैं भैया **ब्र. राजसिंह आर्य जी** की हृदय से कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने पुस्तक के लेखन में और पुस्तक के विषय में कुछ शब्द लिखकर उत्साहवर्धन किया। इसके साथ ही, मैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों (**प्रधान—ब्र. राजसिंह आर्य, महामन्त्री-श्री विनय आर्य** एवं अन्य) की हृदय से आभारी हूँ , जिन्होंने पुस्तक के प्रकाशन का निर्णय लेकर मुझे प्रोत्साहित किया। आशा है कि सभा महर्षि एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में इसी प्रकार संलग्न रहेगी।

निवेदिका
कञ्चन आर्या

ई-32 , अमर कालोनी,
लाजपत नगर-4, नई दिल्ली-24
दूरभाष : 26219175

द्वे वचसी

मान्या बहिन कञ्चन आर्या जी द्वारा लिखित पुस्तक **'महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)'** को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। पुस्तक बहुत ही सरल, स्पष्ट, संक्षिप्त एवं सारगर्भित है। बच्चों के लिए एवं आर्य साहित्य से नये परिचित व्यक्तियों के लिए तो यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। इसमें महर्षि के ग्रन्थों के विषय-निर्देश के साथ-साथ ग्रन्थों की विशेषताएँ भी बतायी गई हैं। पुस्तक लेखिका के गम्भीर चिन्तन का परिणाम है।

आशा है, जिज्ञासु जन महर्षि के इन ग्रन्थों का अध्ययन करके अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकेंगे तथा विश्वास है कि बहिन कञ्चन आर्या जी के निरन्तर स्वाध्याय एवं चिन्तन से प्राप्त ज्ञानामृत के कण जिज्ञासुओं को सतत प्राप्त होते रहेंगे।

॥स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां मा प्रमदितव्यम्॥

विदुषां वशंवदः

आचार्य आनन्द प्रकाश

(आचार्य आनन्द प्रकाश)
आर्ष शोध-संस्थान, अलियाबाद,
मं. शमीरपेट, जि. रंगारेड्डी-500078 (आं. प्र.)
दूरभाष : 08418-261165, चलभाष : 09989395033

(1)

ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ

प्रश्न 1 : महर्षि दयानन्द द्वारा रचित छोटे-बड़े ग्रन्थ कौन-कौन से हैं, उनके नाम बताइए ?

उत्तर : महर्षि दयानन्द द्वारा रचित छोटे-बड़े ग्रन्थों की सूची निम्नलिखित है:-

1. सन्ध्या की पुस्तक
2. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका
3. ऋग्वेद एवं यजुर्वेद का भाष्य
4. चतुर्वेद विषय सूची
5. वेदभाष्य के दो नमूने
6. सत्यार्थप्रकाश
7. पंचमहायज्ञविधि
8. आर्याभिविनय
9. संस्कारविधि
10. आर्योद्देश्यरत्नमाला
11. व्यवहारभानु
12. गोकरुणानिधि
13. अद्वैतमत खण्डन
14. वेदान्तिध्वान्त निवारण
15. वेदविरुद्धमत खण्डन
16. भागवत खण्डन
17. शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण
18. भ्रान्ति निवारण
19. भ्रमोच्छेदन
20. अनुभ्रमोच्छेदन
21. काशी शास्त्रार्थ
22. सत्यधर्मविचार या मेला चांदापुर
23. शास्त्रार्थ विषयक अन्य ग्रन्थ

24. -43. व्याकरण विषयक 20 ग्रन्थ

24. -37. वेदांग प्रकाश (14 भाग)

    38. संस्कृत वाक्य प्रबोध

    39. निरुक्त (मूल)

40. –43. अष्टाध्यायीभाष्य (4 अध्याय)

44. गोतम–अहल्या और इन्द्र–वृत्रासुर की सत्यकथा

45. गर्दभतापिनी उपनिषद्

46. आत्मचरित (स्वलिखित) या स्वकथित जीवनचरित

47. पूना प्रवचन (उपदेश मंजरी)

48. बम्बई प्रवचन

49. पत्र एवं विज्ञापन

प्रश्न 2 : क्या ये सभी ग्रन्थ प्रकाशित और उपलब्ध हैं?

उत्तर : हाँ, ये उपर्युक्त सभी ग्रन्थ और पत्र आदि प्रकाशित किये जा चुके हैं , परन्तु इनमें '**गर्दभतापिनी उपनिषद्**' और '**सन्ध्या की पुस्तक**' (संख्या –1) उपलब्ध नहीं हैं।

प्रश्न 3 : क्या महर्षि के कुछ ग्रन्थ अप्रकाशित भी हैं?

उत्तर : हाँ, महर्षि के कुछ ग्रन्थ अप्रकाशित हैं, जिनकी सूची आगे अलग अध्याय में दी गई है।

(2)

सन्ध्या की पुस्तक (सन्ध्योपासना)

प्रश्न 1 : जब महर्षि मथुरा में स्वामी विरजानन्द जी से विद्याध्ययन करने के बाद आगरा में रहे, तो उन्होंने सर्वप्रथम कौन-सी पुस्तक लिखी थी ?

उत्तर : मथुरा में स्वामी विरजानन्द जी से विद्या ग्रहण करके महर्षि ने जब आगरा में निवास किया, तो उन्होंने सर्वप्रथम **'सन्ध्या'** की पुस्तक लिखी।

प्रश्न 2 : यह पुस्तक कौन से सन् में लिखी थी ?

उत्तर : आगरा में महर्षि **संवत् 1920** (सन् 1863, अप्रैल-मई) **से डेढ़ वर्ष तक रहे थे।** (एक अन्य स्थान पर दो वर्ष रहने का उल्लेख भी मिलता है।) इसी अवधि में यह पुस्तक लिखी गई थी। **निश्चित समय का उल्लेख नहीं है।**

प्रश्न 3 : इस पुस्तक में केवल सन्ध्या के मन्त्र थे अथवा कुछ अन्य विषय भी था ?

उत्तर : श्री पं. लेखराम जी द्वारा लिखित जीवनचरित में लिखा है- 'स्वामी जी के उपदेश से एक सन्ध्या की पुस्तक, जिसके **अन्त में 'लक्ष्मी-सूक्त'** था, छपाई गई।

प्रश्न 4 : उस समय इस पुस्तक के छापने में कितना खर्च हुआ था ?

उत्तर : उस समय इस पुस्तक की तीस हजार के लगभग कापियाँ छापी गई थीं, जिन पर **डेढ़ हजार रुपया व्यय** हुआ था।

प्रश्न 6 : यह व्यय किसने किया था ?

उत्तर : यह व्यय आगरा के ही एक सज्जन **महाशय रूपलाल ने** किया था।

प्रश्न 6 : इस पुस्तक का मूल्य क्या रखा गया था ?

उत्तर : पं. लेखराम जी के अनुसार, पुस्तक **एक आने मूल्य** पर बेची गई थी। जबकि पं. महेश प्रसाद जी के अनुसार, ये पुस्तकें मुफ्त बाँटी गई थीं। पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी के विचार में– 'यह सम्भव है कि कुछ हजार प्रतियाँ बेची गई हों और कुछ मुफ्त बाँटी गई हों।'

प्रश्न 7 : यह पुस्तक कहाँ से छपी थी ?

उत्तर : पुस्तक आगरा के '**ज्वालाप्रकाश प्रेस**' में छपी थी।

प्रश्न 8 : महर्षि ने सर्वप्रथम यही पुस्तक क्यों लिखी ?

उत्तर : **महर्षि ईश्वर–भक्ति पर विशेष बल देते थे,** अत: उन्होंने अपनी रुचि के अनुसार सर्वप्रथम यही पुस्तक लिखी।

प्रश्न 9 : क्या यह पुस्तक अब उपलब्ध है ?

उत्तर : नहीं, अब यह पुस्तक स्वतन्त्र रूप में उपलब्ध नहीं है।

(3)

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

प्रश्न 1 : वेदों का भाष्य लिखने से पूर्व भूमिका के रूप में महर्षि ने कौन–सा ग्रन्थ लिखा था?

उत्तर : ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका।

प्रश्न 2 : ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका लिखने में महर्षि का उद्देश्य क्या था?

उत्तर : महर्षि से पूर्व लिखे गये भाष्यों और टीकाओं से वेदों के विषयों में जो अनेक प्रकार की **भ्रान्तियाँ** फैल गई थीं और उन पर जो **मिथ्या दोषारोपण** हो रहे थे, उनको **दूर करना** इस ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य था।

प्रश्न 3 : इन भ्रान्तियों आदि को दूर करके महर्षि ने इस ग्रन्थ 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' द्वारा क्या प्रतिपादित किया है?

उत्तर : वेद विषयक प्रचलित भ्रान्तियों को दूर करके महर्षि ने इस ग्रन्थ द्वारा लोगों के समक्ष **वेदों का सत्य अर्थ प्रकट करने का प्रयास किया,** जिससे वेदों के वास्तविक और सनातन अर्थ को सब भलीभाँति जान सकें।

प्रश्न 4 : ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका की रचना महर्षि ने कब की?

उत्तर : महर्षि ने **विक्रमी संवत् 1933**, भाद्रमास शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, रविवार के दिन (20 अगस्त, सन् 1876) से इस ग्रन्थ की रचना प्रारम्भ की और इसकी समाप्ति संवत् 1933, मार्गशीर्ष के लगभग प्रथम सप्ताह (पौने तीन माह) में हुई।

प्रश्न 5 : इस ग्रन्थ में कितने अध्याय हैं और अध्याय को

क्या नाम दिया गया है?

उत्तर : इस ग्रन्थ में **57 अध्याय** हैं। अध्याय को **'विषय'** नाम दिया गया है।

प्रश्न 6 : यह ग्रन्थ किस भाषा में लिखा गया है?

उत्तर : मूलतः **संस्कृत भाषा** में लिखा गया है। इसके साथ–साथ **हिन्दी भाषा में अनुवाद** भी प्रस्तुत है।

प्रश्न 7 : इसमें प्रतिपादित कुछ विषयों का नाम बता सकते हैं?

उत्तर : ईश्वरप्रार्थना विषय, वेदोत्पत्ति विषय, वेदों का नित्यत्व विषय, विज्ञानकाण्ड, कर्मकाण्ड, सृष्टि विद्या, गणित विद्या, प्रार्थना–याचना–समर्पण, मुक्ति, नौविमानादि विद्या, वैद्यकशास्त्रमूलविषय, पुनर्जन्म, विवाह, राजप्रजाधर्म विषय आदि।

(4)

ऋग्वेद एवं यजुर्वेद का भाष्य

प्रश्न 1 : वेदों की भूमिका के रूप में 'ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका' लिखने के पश्चात् महर्षि ने वेदों का भाष्य लिखना कब प्रारम्भ किया था ?

उत्तर : 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के पश्चात् **ऋग्वेद का भाष्य** महर्षि दयानन्द ने **विक्रमी संवत् 1934, मार्गशीर्ष, शुक्लपक्ष की षष्ठी तिथि, मंगलवार के दिन** लिखना प्रारम्भ किया था। **यजुर्वेद भाष्य** का प्रारम्भ **विक्रमी संवत् 1934, पौष मास के शुक्लपक्ष में त्रयोदशी तिथि बृहस्पतिवार के दिन** किया। इस प्रकार यजुर्वेद का भाष्य महर्षि ने ऋग्वेदभाष्य के प्रारम्भ करने के लगभग सवा महीने पश्चात् ही प्रारम्भ कर दिया था।

प्रश्न 2 : तो क्या दोनों वेदों के भाष्य महर्षि ने एक साथ ही लिखे थे ?

उत्तर : हाँ, ऋग्वेद और यजुर्वेद **दोनों के भाष्य एक साथ ही** चलते रहे।

प्रश्न 3 : ये भाष्य कितने समय में पूर्ण हुए ?

उत्तर : छोटा होने से **यजुर्वेद का भाष्य** विक्रम संवत् 1939, मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा (पहली तिथि) को शनिवार के दिन पूरा हो गया। इस प्रकार, **लगभग पाँच वर्षों में** यजुर्वेद का भाष्य पूर्ण हुआ। परन्तु ऋग्वेद का भाष्य पूर्ण नहीं हो पाया। ऋग्वेद के दस मण्डल हैं, जबकि इसका भाष्य **सप्तम मण्डल के, 62 वें सूक्त के दूसरे मन्त्र** अर्थात्

5649 मन्त्रों तक ही हो पाया था। इसी दौरान दुर्भाग्यवश संवत् 1940, कार्तिक मास की अमावस्या अर्थात् दीपावली के दिन महर्षि का निर्वाण हो गया और यह महत्त्वपूर्ण कार्य अधूरा ही रह गया।

प्रश्न 4 : ये भाष्य किस भाषा में लिखे गये?

उत्तर : ये भाष्य स्वयं महर्षि ने **मूल रूप से संस्कृत भाषा में** लिखवाये और **पण्डितों से उनका हिन्दी भाषा में भी रूपान्तरण करवाया।** यही कारण है कि कुछ स्थानों पर भाषानुवाद मूल संस्कृत के अनुसार नहीं है।

प्रश्न 5 : वैसे ऋग्वेद में कुल कितने सूक्त और मन्त्र हैं?

उत्तर : ऋग्वेद में कुल **दस मण्डल, 1128 सूक्त** और **10552 मन्त्र** हैं।

प्रश्न 6 : महर्षि ने वेदों का यह भाष्य किसकी सहायता से लिखा?

उत्तर : महर्षि ने **आर्ष पद्धति** से व्याकरण, दर्शन-शास्त्रों, निरुक्त, निघण्टु एवं अन्य ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया था। **उस सत्य ज्ञान के आधार पर एवं परमात्मा की सहायता से** उन्होंने वेद भाष्यों की गलत परम्परा को परिवर्तित कर शुद्ध रीति से भाष्य व अर्थ किये। वेद मन्त्रों के गूढ़ रहस्यों को जानने के लिए वे समाधिस्थ हो जाते थे, और परमात्मा द्वारा प्रदत्त ज्ञान से उन रहस्यों को प्रकट करते थे। अनेक बार समाधि के पश्चात् वे पहले लिखवाये अर्थ को हटाकर नये अर्थ भी लिखवाते थे।

(5)

चतुर्वेद विषय-सूची

प्रश्न 1 : क्या महर्षि द्वारा लिखित वेदविषयक कोई अन्य ग्रन्थ भी उपलब्ध है?

उत्तर : हाँ, महर्षि द्वारा लिखित वेदविषयक एक ग्रन्थ भी उपलब्ध है, जो **छोटा** (लघु) होते हुए भी **बहुत उपयोगी** एवं महत्त्वपूर्ण है।

प्रश्न 2 : इस ग्रन्थ का क्या नाम है?

उत्तर : इस ग्रन्थ का नाम है—'**चतुर्वेद विषय-सूची**'।

प्रश्न 3 : परन्तु इसका नाम तो सुनने में नहीं आया? (परन्तु यह ग्रन्थ प्रसिद्ध तो नहीं है?)

उत्तर : हाँ, यह ग्रन्थ अधिक प्रसिद्ध न होते हुए भी बहुत उपयोगी है।

प्रश्न 4 : इसकी क्या उपयोगिता है?

उत्तर : जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट हो रहा है, इस ग्रन्थ में **चारों वेदों के सभी मन्त्रों के विषय** अर्थात् देवता का उल्लेख किया गया है।

प्रश्न 5 : सच में ही यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी ग्रन्थ है। चारों वेदों के सभी मन्त्रों के देवता अथवा विषय का उल्लेख करना अपने आप में बहुत जटिल कार्य है, परन्तु इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता कहाँ तक सत्य है?

उत्तर : जटिल एवं महत्त्वपूर्ण कार्य होते हुए भी यह ग्रन्थ **पूर्णतः प्रामाणिक** है। क्योंकि इस ग्रन्थ का मूल आलेख स्वयं **महर्षि दयानन्द द्वारा संशोधित** एवं **परोपकारिणी सभा,**

अजमेर **द्वारा संरक्षित** है। इसके प्रूफ का संशोधन आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् भवानीलाल जी भारतीय द्वारा ही किया गया है। सन् 1935 ई. में **पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी** ने नवम्बर-दिसम्बर के महीने में इस **ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी।** उनके अनुसार, यह ग्रन्थ सफेद फुलस्केप कागज पर लिखा हुआ है। इसमें 56 पृष्ठ हैं।

प्रश्न 6 : इस ग्रन्थ का रचना-काल क्या है?

उत्तर : प्रत्यक्ष प्रमाण न मिलने से इसका निश्चय करना कठिन है। हाँ, इतना अवश्य है कि इसकी रचना **ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका की रचना से पूर्व** हो चुकी थी।

प्रश्न 7 : इसका प्रथम बार प्रकाशन कब और कहाँ से हुआ?

उत्तर : इस ग्रन्थ का प्रथम बार प्रकाशन **सन् 1971** (विक्रमी संवत् 2028), दयानन्दाब्द 147 में **अजमेर, वैदिक यन्त्रालय से** ही हुआ था।

प्रश्न 8 : क्या चारों वेदों के सभी मन्त्रों के विषयों की सूची एक साथ प्रस्तुत है अथवा पृथक्-पृथक् है?

उत्तर : इस ग्रन्थ में चारों वेदों के मन्त्रों के विषयों की सूची एक साथ नहीं, अपितु प्रत्येक वेद के मन्त्रों की सूची **पृथक्-पृथक्** प्रस्तुत की गई है। यथा—**ऋग्वेद विषय सूची, यजुर्वेद विषय सूची, सामवेद विषय सूची तथा अथर्ववेद विषय सूची।** महर्षि ने एक स्थान पर ही वेदों के सभी मन्त्रों के विषय (देवता) को प्रस्तुत करके सचमुच एक महत्त्वपूर्ण एवं अमूल्य कार्य कर दिया। यह वेदों का अध्ययन एवं वेद के विभिन्न विषयों के अनुसन्धानकर्ताओं के लिए सुगम मार्ग-निर्माण के समान ही उपयोगी है।

प्रश्न 9 : इन चारों विषय सूची का क्रम क्या है?

उत्तर : चतुर्वेद विषय सूची में क्रम है—**ऋग्वेद, सामवेद,**

अथर्ववेद और **यजुर्वेद** विषय सूची। पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी के मत में, *'सम्भवतः यजुर्वेद के साथ कर्मकाण्ड की घनिष्ठता के कारण ऋषि ने इस पर सबसे अन्त में विचार किया हो। अथवा वे इसी क्रम से वेदों का भाष्य रचना चाहते हों।'*

(6)

वेदभाष्य के दो नमूने

प्रश्न 1 : महर्षि को चारों वेदों का भाष्य करने की आवश्यकता क्यों महसूस हुई?

उत्तर : महर्षि भली प्रकार जान गये थे कि भारत की धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक अवनति का मुख्य कारण वैदिक शिक्षा का लोप और पौराणिक शिक्षा का प्रसार है। वेद का वास्तविक स्वरूप महाभारत युद्ध के पश्चात् विभिन्न मत-मतान्तरों की आंधी से सर्वथा ओझल हो गया है। (सत्यार्थ प्रकाश, 11 वें समुल्लास की अनुभूमिका) समस्त आर्ष ग्रन्थों के अनुशीलन और अध्ययन से वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि नवीन भाष्यों (उब्बट, महीधर, सायण आदि द्वारा किये गये) के कारण ही वेदों का वास्तविक और शुद्ध स्वरूप दूषित हो गया है। **जब तक वेदों का प्राचीन शुद्ध स्वरूप प्रकट नहीं होगा, तब तक आर्य जाति का उत्थान और कल्याण होना सम्भव नहीं है,** अतः उन्हें आर्य जाति, वैदिक शिक्षा एवं आचार-विचार के पुनरुत्थान के लिए प्राचीन आर्ष पद्धति के अनुसार वेदों का भाष्य करने की आवश्यकता महसूस हुई थी।

प्रश्न 2 : महर्षि ने वेदभाष्य करने का संकल्प और आरम्भ कब किया ?

उत्तर : महर्षि ने वेदभाष्य करने का **संकल्प संवत् 1929 के अन्त** या संवत् 1930 के आदि में किया और उसके लिए **प्रयत्न तभी से आरम्भ कर दिया।**

प्रश्न 3 : क्या महर्षि ने सीधा ही वेद भाष्य लिखना प्रारम्भ कर दिया था ? अथवा इसकी तैयारी के रूप में कुछ और भी प्रकाशित किया था ?

उत्तर : वेदभाष्य लिखने से पूर्व महर्षि ने उसका स्वरूप जनता में प्रकट करने के लिए दो बार **'वेदभाष्य के नमूने'** प्रकाशित करवाये थे।

प्रश्न 4 : इन नमूनों में कितने मन्त्रों का भाष्य था ?

उत्तर : पहले नमूने में ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र (ओम् अग्निमीळे पुरोहितम्) **अथवा प्रथम पूरे सूक्त का भाष्य** प्रकाशित किया गया था। इसमें संस्कृत के साथ गुजराती और मराठी अनुवाद भी था। पहले मन्त्र के दो प्रकार के अर्थ किये थे— भौतिक और पारमार्थिक। महर्षि ने इसकी भूमिका में लिखा था कि सारे वेदों का इसी शैली में अनुवाद करूँगा। श्री पं. देवेन्द्रनाथ जी के अनुसार, इस नमूने में ऋग्वेद के प्रथम पूरे सूक्त का भाष्य था, जबकि पं. लेखराम जी के अनुसार केवल प्रथम मन्त्र का भाष्य था। प्रमाणों के अनुसार पं. देवेन्द्रनाथ जी की बात सत्य सिद्ध होती है।

दूसरे नमूने में ऋग्वेद के **प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त** और **द्वितीय सूक्त के प्रथम मन्त्र** के संस्कृत भाष्य का कुछ अंश छपा था। इसमें **प्रत्येक मन्त्र के दोनों प्रकार के** (भौतिक और पारमार्थिक) **अर्थ** दर्शाये गये थे।

प्रश्न 5 : वेदभाष्य के इन नमूनों की क्या आवश्यकता थी ?

उत्तर : ऋषि दयानन्द का काल वैदिक ग्रन्थों की दृष्टि से

एकदम प्रतिकूल काल था। सायण, महीधर, उब्बट आदि के गलत भाष्यों से वेदों के विषयों में अनेक भ्रान्तियाँ फैल चुकी थीं। उसकी गलत दिशा को मोड़कर आर्ष पद्धति के अनुसार अर्थ करना अत्यधिक साहस का काम था। इस कार्य के लिए केवल जनता से सहायता मिलने की आशा थी। अतः **वेदभाष्य के इस भावी स्वरूप को नमूने के तौर पर प्रस्तुत करके महर्षि लोगों के अनुकूल और प्रतिकूल दृष्टिकोण को जानना चाहते थे।** आपत्ति करने वालों की शंकाओं का समाधान करके निर्विघ्न रूप से इस कार्य को आगे बढ़ाना चाहते थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने प्रथम नमूना काशी के पण्डित बालशास्त्री व स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती को तथा कलकत्ता के एवं अन्य स्थानीय पण्डितों को भी भेजा था।

प्रश्न 6 : क्या किसी ने इसका विरोध किया था?

उत्तर : स्वामी विशुद्धानन्द आदि उपर्युक्त पंडितों ने तो विरोध नहीं किया था, परन्तु द्वितीय नमूने पर कलकत्ता संस्कृत कालेज के स्थानापन्न **प्रिंसिपल श्री पं. महेशचन्द्र न्यायरत्न** और **पं. गोविन्दराय ने आक्षेप किये** और इस विषयक पुस्तकें भी छपवाई थीं। पं. शिवनारायण अग्निहोत्री ने भी इसके खण्डन में '**दयानन्द सरस्वती के वेदभाष्य रिव्यू**' नामक पुस्तक छपवाई थी और '**रिसाले हिन्द**' में भी कुछ लेख छपवाये थे।

प्रश्न 7 : क्या महर्षि ने इन सब आक्षेपों का उत्तर दिया था?

उत्तर : हाँ, महर्षि ने इन सब आक्षेपों का उत्तर '**भ्रान्ति निवारण**' नामक पुस्तक में दिया था।

प्रश्न 8 : वेदभाष्य के ये दोनों नमूने कब छापे गये थे?

उत्तर : वेदभाष्य के ये दोनों नमूने क्रमशः **कार्तिक सं. 1931 में** तथा **संवत् 1939 में** छापे गये थे।

(7)

सत्यार्थ-प्रकाश

प्रश्न 1 : महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थों में सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ कौन-सा है?

उत्तर : सत्यार्थ-प्रकाश।

प्रश्न 2 : सत्यार्थ-प्रकाश सबसे अधिक प्रसिद्ध क्यों हुआ?

उत्तर : क्योंकि इस ग्रन्थ को पढ़ने से अज्ञान अन्धकार में भटक रहे अंसख्य लोगों को **ज्ञान का प्रकाश** मिला। ज्ञान के इस दीपक के प्रकाश में कोई भी मनुष्य झूठे मत-मतान्तरों एवं पाखण्ड के गड्ढे में नहीं गिर सकता। उसके हाथ में सभी **गुत्थियों और उलझनों को सुलझाने की चाबी प्राप्त हो जाती है।**

प्रश्न 3 : इस ग्रन्थ की रचना में महर्षि का मुख्य प्रयोजन क्या था?

उत्तर : महर्षि दयानन्द के अपने ही शब्दों में, ***"मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।"*** ग्रन्थ का नाम 'सत्यार्थ प्रकाश' (सत्य + अर्थ + प्रकाश) स्वयं ही इस प्रयोजन को स्पष्ट कर रहा है।

प्रश्न 4 : महर्षि के अनुसार सत्य का अर्थ क्या है?

उत्तर : ***"जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।"*** वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य

का प्रकाश किया जाय।

प्रश्न 5 : इस ग्रन्थ में कितने अध्याय हैं?

उत्तर : इस ग्रन्थ में **चौदह अध्याय** अथवा विभाग हैं, जिन्हें **'समुल्लास'** का नाम दिया गया है। इनमें पहले दस समुल्लास पूर्वार्द्ध और अन्तिम चार समुल्लास उत्तरार्द्ध कहलाते हैं। अन्त में **'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश'** है।

प्रश्न 6 : इसकी रचना कब की गई?

उत्तर : प्रथम संस्करण का आरम्भ आषाढ़ बदी 13, संवत् 1931 (12 जून, सन् 1874, शुक्रवार) के दिन हुआ और **समाप्ति विक्रमी संवत् 1931, आश्विन शुक्ला की प्रतिपदा, रविवार के दिन हुई।** द्वितीय संस्करण का समय भाद्रपद शुक्लपक्ष, विक्रमी संवत् 1939 है। महर्षि ने इसे महाराणा जी के उदयपुर में लिखा।

प्रश्न 7 : पूर्वार्द्ध के दस समुल्लासों में किन-किन विषयों को लिया गया है?

उत्तर : पूर्वार्द्ध के दस समुल्लासों में भिन्न-भिन्न विषयों को लेकर महर्षि ने अपने विचारों को अभिव्यक्त किया है। वे विषय क्रमशः निम्नलिखित हैं:—

1. **प्रथम** समुल्लास में ईश्वर के मुख्य नाम **ओ३म् के साथ सौ विभिन्न नामों की अर्थसहित व्याख्या।**

2. **द्वितीय** समु. में **सन्तानों को शिक्षा प्रदान करने की विधि और महत्त्व।**

3. तृतीय समु. में **ब्रह्मचर्य, पठन व्यवस्था, सत्यासत्य ग्रन्थों के नाम और पढ़ने-पढ़ाने की रीति।**

4. **चतुर्थ** समु. में **विवाह और गृहाश्रम का व्यवहार।**

5. **पंचम** समु. में **वानप्रस्थ** और **संन्यास** आश्रम की विधि।

6. **छठे** समु. में **राजा, राजनीति** आदि विषयों को लेकर राजधर्म की व्याख्या।

7. **सप्तम** समु. में **वेद** और **ईश्वर** का विषय।

8. अष्टम समु. में **सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति** और **प्रलय** का वर्णन।

9. **नवम** समु. में **विद्या, अविद्या, बन्ध** और **मोक्ष** की व्याख्या।

10. **दशम** समु. में **आचार, अनाचार, भक्ष्य** और **अभक्ष्य** विषयों की व्याख्या।

इस प्रकार ये **दसों समुल्लास मण्डनात्मक** हैं, जिनमें महर्षि ने सत्य सनातन वेद धर्म के अनुसार उपर्युक्त विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं।

प्रश्न 8 : उत्तरार्द्ध के चार समुल्लासों में किन-किन विषयों का प्रतिपादन है?

उत्तर : ये **चार समुल्लास खण्डनात्मक** हैं अर्थात् इनमें महर्षि ने अन्य मत-मतान्तरों की मिथ्या बातों का खण्डन किया है। इन ग्यारह से चौदह समुल्लासों में जिन-जिन मतों के विषय में लिखा है, वे निम्नलिखित हैं:—

1. **ग्यारहवें** समुल्लास में **आर्यावर्त** अर्थात् **भारत में उस समय प्रचलित मत-मतान्तरों में मान्य मिथ्या बातों का खण्डन।**

2. **बारहवें** समु. में **चार्वाक, बौद्ध** और **जैन, इन नास्तिक मतों का खण्डन।**

3. **तेरहवें** समु. में **ईसाई मत का खण्डन।**

4. **चौदहवें** समु. में **मुसलमानों के मत का खण्डन।**

प्रश्न 9 : महर्षि को दूसरे मतों का खण्डन करके उनका मन दुःखाने की क्या आवश्यकता थी? केवल अपने सत्य विचारों को

ही प्रकट कर देते।

उत्तर : उस समय विभिन्न मत-मतान्तरों की बुराइयों से देश की जो दुर्दशा हो रही थी उससे महर्षि बहुत चिन्तित थे। वे इन बुराइयों को दूर कर देश व देशवासियों की दशा सुधारना चाहते थे, किसी का दिल दु:खाना नहीं। महर्षि के शब्दों में :—

"विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने वे सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।" महर्षि आगे लिखते हैं:—

"मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है, परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रक्खी है और न किसी का मन दु:खाना वा किसी की हानि पर तात्पर्य है। किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं।" इस प्रकार मनुष्यों की उन्नति को लक्ष्य में रखकर उन्होंने असत्य बातों का खण्डन किया।

प्रश्न 10 : इससे तो भिन्न-भिन्न मतों की बुराइयाँ जानकर आपस में मन-मुटाव और लड़ाई-झगड़े होंगे?

उत्तर : ऐसा नहीं है, महर्षि तो सभी मनुष्यों को एक ही धर्म का अनुयायी बनाकर प्रेमपूर्वक रखना चाहते थे। इसमें उनके दो उद्देश्य थे। उनके शब्दों में, ***"इसमें यह अभिप्राय रखा गया है कि जो सब मतों में सत्य-सत्य बातें हैं, वे वे सब में***

अविरुद्ध होने से उनका स्वीकार करके जो-जो मत-मतान्तरों में मिथ्या बातें हैं, उन-उन का खण्डन किया है। इसमें यह भी अभिप्राय रखा है कि सब मत-मतान्तरों की गुप्त वा प्रकट बुरी बातों का प्रकाश कर विद्वान् अविद्वान् सब साधारण मनुष्यों के सामने रखा है, जिससें सबसे सबका विचार होकर परस्पर प्रेमी हो के एक सत्य मतस्थ होवें, इस प्रकार यदि सब परस्पर आचरण करें तो लड़ाई-झगड़े के स्थान पर प्रेम भाव की वृद्धि होगी।"

प्रश्न 11 : अन्त में प्रस्तुत 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' का क्या तात्पर्य है?

उत्तर : 'स्वमन्तव्यामन्तव्य' में महर्षि ने सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् **सार्वजनिक धर्म, जिसको सदा से सब मानते आये और मानेंगे भी, की परिभाषाएं प्रस्तुत की हैं।** इनको सनातन नित्यधर्म कहते हैं। वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त विद्वानों द्वारा जो ईश्वर आदि शास्त्र पदार्थ जैसे माने गये हैं, उनको महर्षि भी वैसा ही मानते थे उसी को उन्होंने इसमें प्रकाशित किया है। इसमें उन्होंने **'ईश्वर' से लेकर धर्म, अधर्म, स्वर्ग, नरक, जन्म, मृत्यु, सहित सगुणनिर्गुणस्तुति प्रार्थनोपसाना' तक 51 पदार्थों के विषय में अपना सिद्धान्त (मन्तव्य) प्रकट किया है। कोई नवीन कल्पना या मत चलाने का उनका लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं था।**

(8)

संस्कार-विधि

प्रश्न 1 : मनुष्यों के शरीर और आत्मा को सुसंस्कृत करने के लिए महर्षि दयानन्द ने कौन-से ग्रन्थ की रचना की ? (अथवा जिस ग्रन्थ की रचना की उसका नाम क्या है ?)

उत्तर : संस्कारविधि।

प्रश्न 2 : संस्कारविधि में कितने संस्कारों का विधान है ?

उत्तर : 16 संस्कारों का।

प्रश्न 3 : सबसे पहला और सबसे अन्तिम संस्कार कौन सा है?

उत्तर : सबसे पहला संस्कार 'गर्भाधान संस्कार' है, जो बच्चे के जन्म से पहले किया जाता है। वस्तुतः शरीर का आरम्भ गर्भाधान से ही हो जाता है। **सबसे अन्तिम संस्कार 'अन्त्येष्टि संस्कार' है,** जो शरीर के मृत होने पर उसको भस्म करने के लिए किया जाता है।

प्रश्न 4 : बच्चे के जन्म लेने से पूर्व कितने और कौन-कौन से संस्कार किये जाते हैं ?

उत्तर : बच्चे के जन्म से पूर्व तीन संस्कार किये जाते हैं, जिनका नाम क्रमशः : 1) **गर्भाधान संस्कार**, 2) **पुंसवन संस्कार**, 3) **सीमन्तोन्नयन संस्कार** है।

प्रश्न 6 : जन्म लेने के पश्चात् विवाह पर्यन्त किन-किन संस्कारों का,विधान है ?

उत्तर : बच्चे के जन्म लेते ही उसका मल आदि पोंछ, स्नान कराने के पश्चात् 4) **जातकर्म संस्कार**, तत्पश्चात् क्रमशः 5)

नामकरण, 6) **निष्क्रमण**, 7) **अन्नप्राशन**, 8) **चूड़ाकर्म**, 9) **कर्णवेध**, 10) **उपनयन**, 11) **वेदारम्भ** और 12) **समावर्त्तन संस्कारों** का विधान है। इसके पश्चात् , 13) **विवाह संस्कार** का नम्बर आता है, जो तेरहवाँ संस्कार है। इस प्रकार, जन्म के पश्चात् विवाह तक दस संस्कारों का विधान किया गया है।

प्रश्न 6 : विवाह संस्कार के पश्चात् कौन–से संस्कार शेष बचते हैं?

उत्तर : विवाह संस्कार के पश्चात् क्रमशः 14) **वानप्रस्थ**, 15) **संन्यास**, और 16) **अन्त्येष्टि संस्कार** शेष बचते हैं।

प्रश्न 7 : संस्कारविधि में बहुत लम्बा प्रकरण – '**गृहाश्रमप्रकरणम्**' दिया गया है। आपने तो उसका नामोल्लेख भी नहीं किया, क्यों?

उत्तर : यहाँ संस्कारों की बात चल रही है, जबकि '**गृहाश्रमप्रकरण**' वस्तुतः विवाह संस्कार का एक भाग है, पृथक् संस्कार नहीं। विवाह करने के पश्चात् जब युवक और युवती गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट हो जाते हैं, तो अपनी सामर्थ्य के अनुसार परोपकार करना, नियत समय पर यथाविधि ईश्वर की उपासना, आदि **पंचयज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ** और **अतिथियज्ञ)** करना उनका कर्तव्य बन जाता है। इन सबका विधान गृहाश्रम प्रकरण में किया गया है। अतः हमने इसका अलग से नामोल्लेख नहीं किया।

प्रश्न 8 : इन सोलह संस्कारों का मुख्य उद्देश्य एवं लाभ क्या हैं?

उत्तर : इन सोलह संस्कारों को विधिपूर्वक करने एवं तदनुसार जीवन यापन करने से **शरीर और आत्मा सुसंस्कृत बनते हैं**, जिससे मनुष्य जीवन के मुख्य चार पुरुषार्थों—**धर्म, अर्थ, काम** और **मोक्ष**—की **प्राप्ति हो** सकती है। इनके करने से

सन्तानें अत्यन्त योग्य बनती हैं।

प्रश्न 9 : क्या सोलह संस्कारों के अतिरिक्त संस्कार विधि में कुछ अन्य विषय भी मिलता है?

उत्तर : मुख्य रूप से '**सामान्य प्रकरण**' का वर्णन इन सोलह संस्कारों के अतिरिक्त है। वास्तव में, **यह प्रकरण भी संस्कारों का एक अभिन्न अंग है, जिसके बिना संस्कार की क्रियाविधि पूर्ण नहीं होती।** वैसे संस्कारों के अतिरिक्त जो हम सामान्य यज्ञ करते हैं, वह इस सामान्य प्रकरण के द्वारा ही करते हैं।

प्रश्न 10 : संस्कार विधि में अध्यायों का विभाजन किस नाम से किया गया है?

उत्तर : संस्कार विधि में '**प्रकरण**' नाम से अध्यायों का विभाजन किया गया है।

प्रश्न 11 : इस संस्कारविधि की रचना सत्यार्थप्रकाश से पहले की गई या बाद में?

उत्तर : इसकी रचना महर्षि ने **सत्यार्थप्रकाश के पश्चात्** ही **विक्रमी संवत् 1932, कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष 30, अमावस्या को शनिवार के दिन प्रारम्भ की थी** और संवत् 1932, पौष शुक्ल कृष्ण पक्ष 7, सोमवार के दिन इसका लेखन समाप्त हुआ। **संवत् 1933 के अन्त में,** बम्बई '**एशियाटिक प्रेस**' से छप कर यह प्रकाशित हो गया था। इसका **दूसरा संस्करण** कुछ सुधार व संशोधन के साथ विक्रमी संवत् 1940, आषाढ़ मास बदी 13 तिथि, कृष्ण पक्ष रविवार के दिन पुनः छपाने का विचार महर्षि द्वारा किया गया और संशोधन के साथ इसकी समाप्ति **विक्रमी संवत् 1940, भादपद्र मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या** को होकर पाण्डुलिपि तैयार हो चुकी थी।

प्रश्न 12 : इस ग्रन्थ की रचना किस भाषा में की गई है?

उत्तर : इस ग्रन्थ में **मन्त्र संस्कृत भाषा में** तथा **अन्य निर्देश** व **विधि** आदि **हिन्दी भाषा में** हैं।

(9)

पञ्चमहायज्ञविधि

प्रश्न 1 : इस पुस्तक में किस विषय का वर्णन किया गया है?

उत्तर : इस पुस्तक में प्रत्येक मनुष्य के लिए **नित्य प्रति करने योग्य आवश्यक कर्मों की विधि** बताई गई है।

प्रश्न 2 : ये नित्य कर्म कौन-कौन से हैं?

उत्तर : ये नित्य कर्म हैं—1) **ब्रह्मयज्ञ** अर्थात् सन्ध्या, 2) **देवयज्ञ** (यज्ञ या हवन), 3) **पितृयज्ञ,** 4) **भूतयज्ञ** या **बलिवैश्वदेव यज्ञ** और 5) **नृयज्ञ** या **अतिथि यज्ञ**। इन्हीं का दूसरा नाम **'पंच महायज्ञ'** है।

प्रश्न 3 : यह पुस्तक किस भाषा में लिखी गई है?

उत्तर : मूल **संस्कृत मन्त्रों** के साथ उनके **संस्कृत भाषा** में **भाष्य** तथा **हिन्दी में भावार्थ** दिये गये हैं।

प्रश्न 4 : इसकी रचना महर्षि ने कब की?

उत्तर : महर्षि ने **विक्रमी संवत् 1934, भाद्रपद मास की पूर्णिमा के दिन** इसका लेखन पूर्ण किया। यह संस्करण महर्षि द्वारा अन्तिम बार संशोधित है। अतः यही सर्वाधिक प्रामाणिक है। इससे पूर्व वाले संस्करण नहीं।

(10)

आर्याभिविनय

प्रश्न 1 : ईश्वर के स्वरूप के ज्ञान के लिए महर्षि ने मुख्य रूप से कौन-से ग्रन्थ की रचना की ?

उत्तर : महर्षि ने '**आर्याभिविनय**' नामक लघु ग्रन्थ द्वारा **ईश्वर के स्वरूप** का ज्ञान कराया है।

प्रश्न 2 : इस ग्रन्थ में किस माध्यम से ईश्वर के स्वरूप का बोध कराया गया है ?

उत्तर : वेदों के **मूल मन्त्रों का हिन्दी भाषा में व्याख्यान** करके ईश्वर के स्वरूप का बोध कराया है।

प्रश्न 3 : क्या इन मन्त्रों द्वारा केवल ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान होता है ?

उत्तर : ईश्वर के स्वरूप के साथ-साथ **परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना** तथा **धर्मादि विषयों** का भी वर्णन है।

प्रश्न 4 : क्या इस ग्रन्थ में सभी वेदों से मन्त्र लिये गये हैं ?

उत्तर : नहीं, इसमें केवल दो वेदों—**ऋग्वेद (53 मन्त्र)** और **यजुर्वेद (54 मन्त्र)** से ही मन्त्र लिये गये हैं। इसके अतिरिक्त, **एक मन्त्र तैत्तिरीय आरण्यक** का भी है।

प्रश्न 6 : हमने तो सुना है कि वेद मन्त्रों के अर्थ व्यावहारिक और परमेश्वर-सम्बन्धी, दोनों प्रकार के होते हैं, परन्तु यहाँ व्यवहार सम्बन्धी उल्लेख नहीं किया गया।

उत्तर : हाँ, वेद-मन्त्रों के अर्थ व्यावहारिक और आध्यात्मिक (परमेश्वर सम्बन्धी), दोनों प्रकार के होते हैं। परन्तु यहां महर्षि

ने परमेश्वर सम्बन्धी एक प्रकार का ही अर्थ (वह भी संक्षेप में) किया है। अन्यथा ग्रन्थ का आकार बढ़ जाता। ऋषि दयानन्द के शब्दों में, ***"इस ग्रन्थ से तो केवल मनुष्यों को ईश्वर का स्वरूप ज्ञान और भक्ति, धर्मनिष्ठा, व्यवहार शुद्धि इत्यादि प्रयोजन सिद्ध होंगे, जिससे नास्तिक और पाखण्ड मतादि अधर्म में मनुष्य न फंसे।"*** (आर्याभिविनय की उपक्रमणिका से उद्धृत)

प्रश्न 6 : इस ग्रन्थ में कितने अध्याय हैं और उनका नाम क्या है?

उत्तर : इस ग्रन्थ में **दो अध्याय** हैं, जिनका **नाम 'प्रकाश'** दिया गया है। पहले प्रकाश में ऋग्वेद से तथा द्वितीय प्रकाश में यजुर्वेद से मन्त्र लिये गये हैं।

प्रश्न 7 : इसमें कुल कितने मन्त्रों का व्याख्यान है?

उत्तर : कुल **108 मन्त्रों का** व्याख्यान है। **पहले प्रकाश में 53** और **द्वितीय में 55 मन्त्रों** की व्याख्या है।

प्रश्न 8 : इस ग्रन्थ का लेखन महर्षि ने कब प्रारम्भ किया?

उत्तर : विक्रमी **संवत् 1932, मिती, चैत्र शुक्ला 10,** गुरुवार के दिन महर्षि ने इस ग्रन्थ का लेखन प्रारम्भ किया था।

प्रश्न 9 : महर्षि ने केवल दो वेदों से ही मन्त्र क्यों लिये, सभी से क्यों नहीं?

उत्तर : महर्षि के एक पत्र (श्री गोपालराव हरि देशमुख को संवत् 1932, चैत्र बदी 9, शनिवार को लिखे) से स्पष्ट ज्ञात होता है कि वे **इस पुस्तक के चार अध्याय और बनाना चाहते थे।** सम्भवतः इनमें सभी वेदों से मन्त्र लेते, परन्तु किसी कारणवश यह ग्रन्थ अपूर्ण रहा।*

---

* विस्तार के लिए देखिए 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास'— लेखक : युधिष्ठिर मीमांसक, प्रथम संस्करण, पृ. सं.–91।

प्रश्न 10 : यह पुस्तक किस भाषा में है?

उत्तर : पुस्तक में **मूल मन्त्र तो** (वेदों के होने के कारण) **संस्कृत भाषा** में हैं, परन्तु **इनके अर्थ एवं व्याख्या हिन्दी भाषा में** है।

प्रश्न 11 : क्या 'आर्याभिविनय' पुस्तक का अन्य भाषाओं में भी अनुवाद मिलता है?

उत्तर : हाँ, इसके '**गुजराती**' और '**अंग्रेजी**' **भाषाओं में अनुवाद** मिलते हैं।

[**गुजराती अनुवाद** — श्री स्वर्गीय पं. ज्ञानेन्द्र जी ने रामलाल कपूर ट्रस्ट से प्रकाशित आर्याभिविनय के आधार पर इसका गुजराती भाषा में अनुवाद किया, जो सं. 1999 में प्रकाशित किया गया था।

अंग्रेजी अनुवाद — 'आर्याभिविनय' का अंग्रेजी अनुवाद श्री स्वामी भूमानन्द जी सरस्वती ने किया था, जिसे पं. ठाकुरदत्त अमृतधारा धर्मार्थ ट्रस्ट (लाहौर) की ओर से सन् 1942 में छापा गया था।]

(11)

आर्योद्देश्यरत्नमाला

प्रश्न 1 : इस पुस्तक का विषय क्या है?

उत्तर : इसमें **महत्त्वपूर्ण व्यावहारिक शब्दों** (आर्यों के मन्तव्यों) की परिभाषाएँ प्रस्तुत की गई हैं, जो वेदादि शास्त्रों पर आधारित हैं।

प्रश्न 2 : कितने मन्तव्यों का अर्थ दिया गया है?

उत्तर : इसमें **100 मन्तव्यों (नियमों) का संग्रह** है। अर्थात् सौ नियमों रूपी रत्नों की माला गूँथी गई है।

प्रश्न 3 : पुस्तक में कौन-सी भाषा का प्रयोग है?

उत्तर : हिन्दी भाषा का।

प्रश्न 4 : पुस्तक का उद्देश्य क्या है?

उत्तर : धर्म व व्यवहार में आने वाले इन शब्दों एवं नियमों का **सच्चा व वास्तविक अर्थ समझ कर व्यक्ति भटकने से बच जाए।** अत: सब मनुष्यों के हितार्थ लिखी गई।

प्रश्न 6 : रचना का समय क्या है?

उत्तर : विक्रमी संवत् 1934, श्रावण मास के शुक्लपक्ष की सप्तमी, बुधवार के दिन पूर्ण हुई।

प्रश्न 6 : क्या इस पुस्तक का किसी अन्य भाषा में भी अनुवाद हुआ है?

उत्तर : हाँ, इसका **अंग्रेजी भाषा में भी अनुवाद** किया गया है।

(12)

व्यवहारभानु

प्रश्न 1 : क्या महर्षि ने 'व्यवहारभानु' नामक ग्रन्थ की भी रचना की है?

उत्तर : हाँ, महर्षि ने व्यवहारभानु नामक एक अन्य उपयोगी ग्रन्थ भी लिखा है।

प्रश्न 2 : इस ग्रन्थ को लिखने का क्या प्रयोजन है?

उत्तर : जैसा कि इसके नाम से ही विदित होता है—**व्यवहार का सूर्य** या **व्यवहार रूपी सूर्य।** जैसे सूर्य के प्रकाश में अन्धकार समाप्त होकर सब कार्य भली प्रकार सिद्ध होते हैं, उसी प्रकार जो व्यक्ति व्यवहार में कुशल होता है, वह जीवन में सुख व सफलता प्राप्त करता है। अत: महर्षि ने सबको, विशेषकर बालकों को, यथायोग्य व्यवहार की शिक्षा देने के लिए इस ग्रन्थ को रचा। महर्षि के अपने शब्दों में, ***"व्यवहारभानु ग्रन्थ को बनाकर प्रसिद्ध करता हूँ कि जिसको देख-दिखा, पढ़-पढ़ाकर मनुष्य अपने और अपने-अपने संतान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।"***

प्रश्न 3 : क्या इसमें केवल व्यवहार की शिक्षा ही दी गई है?

उत्तर : नहीं, व्यवहार के अतिरिक्त विद्या-अविद्या, धर्म-अधर्म, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, सत्य-असत्य, मूर्ख-अमूर्ख, पण्डित-अपण्डित, न्याय-अन्याय आदि अनेक विषयों का परिचय व ज्ञान प्रश्न-उत्तर के माध्यम से कराया गया है। इसके अतिरिक्त, **शिक्षा प्रदान करने की विधि, ब्रह्मचर्य, राजा आदि अनेक विषयों** को भी लिया गया है।

प्रश्न 4 : क्या इसमें केवल पारिवारिक व्यवहार का उल्लेख है अथवा अन्य भी ?

उत्तर : इसमें माता-पिता व सन्तान के आपस में व्यवहार के अतिरिक्त बालक से लेकर वृद्ध पर्यन्त मनुष्यों के सुधार के लिए **आचार्य, विद्यार्थी, राजा-प्रजा, धार्मिक, अधार्मिक, मूर्ख, बुद्धिमान, पति-पत्नी इन सबको भी आपसी व्यवहार में कुशलता प्राप्त करने की शिक्षा प्रदान** की गई है।

प्रश्न 6 : इससे तो विदित होता है कि यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी होगा ?

उत्तर : हाँ, निश्चित रूप से यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी है। इसके पठन से जहाँ विद्या पढ़ने-पढ़ाने की प्रेरणा मिलती है, वहाँ यह भी पता चलता है कि जो मनुष्य विद्या कम भी जानता है, परन्तु दुष्ट व्यवहारों को छोड़कर धार्मिक होके **खाने-पीने, बोलने, सुनने, बैठने, उठने, लेन-देन आदि व्यवहार सत्य से युक्त होकर यथायोग्य रूप से करता है, वह कहीं कभी दुःख को प्राप्त नहीं होता।** इसके विपरीत, जो उच्च विद्या पढ़कर भी उत्तम व्यवहार नहीं करता, दुष्ट कर्म करता है, वह कभी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। इस प्रकार, **यह सुख प्राप्ति का मार्ग-दर्शक ग्रन्थ है।**

प्रश्न 6 : यह ग्रन्थ किस भाषा में लिखा गया है ?

उत्तर : यह ग्रन्थ **सरल हिन्दी भाषा में** लिखा गया है, जिससे सभी इसे सुखपूर्वक समझ कर अपना व्यवहार व स्वभाव सुधार कर उत्तम कार्य कर सकें। **बीच-बीच में संस्कृत भाषा में प्रमाण भी दिये** गये हैं। अनेक **मनोरंजक दृष्टान्त** देकर अभिप्राय स्पष्ट किया गया है। इससे ग्रन्थ बहुत अधिक सरल एवं रुचिकर बन गया है।

प्रश्न 7 : 'व्यवहारभानु' की रचना कब हुई ?

उत्तर : इस ग्रन्थ का रचना काल **संवत् 1936, फाल्गुन**

मास, शुक्ल पंक्ष की 15वीं तिथि है। इसे महर्षि ने **काशी में** लिखा था।

(13)

गोकरुणानिधि

प्रश्न 1 : ऐसा सुनने में आया है कि महर्षि ने पशुओं की, विशेषकर गौओं की, रक्षा के उद्‌देश्य से भी कोई ग्रन्थ लिखा था। उसका क्या नाम है?

उत्तर : हाँ! महर्षि ने सभी पशुओं की हिंसा रोककर उनकी रक्षा करने के उद्‌देश्य से '**गोकरुणानिधि**' नामक पुस्तक लिखी है। चूंकि गौओं के दूध और बैलों से सबसे अधिक हित होता है, अत: उन्होंने गौ की रक्षा पर अधिक बल दिया है। वैसे सभी पशुओं की सुरक्षा के लिए लिखा है।

प्रश्न 2 : पशुओं की रक्षा करके महर्षि क्या सिद्ध करना चाहते हैं?

उत्तर : इससे मुख्य रूप से महर्षि दो प्रकार के उद्‌देश्यों की पूर्ति चाहते हैं:—

1. सर्वशक्तिमान् ईश्वर की तरह सब मनुष्य अपने अन्दर **दया और न्याय के भाव उत्पन्न करके स्वार्थपन से कृपापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करें।** उनकी दृष्टि में वे लोग तिरस्करणीय हैं, जो अपने लाभ के पीछे सबके सुखों का नाश करते हैं।

2. इस पुस्तक का दूसरा उद्देश्य है— गाय आदि पशुओं को जहाँ तक सामर्थ्य हो बचाया जाय, जिससे **दूध, घी और खेती बढ़ने से सबको सुख बढ़ता** रहे।

प्रश्न 3 : क्या यह बहुत बड़ा ग्रन्थ है? और किसको लक्ष्य करके लिखा गया है?

उत्तर : यह **बहुत छोटा-सा ग्रन्थ** है। इसको मुख्य रूप से उस समय के ब्रिटिश राज्य की **सम्राज्ञी श्रीमती राजराजेश्वरी श्री विक्टोरिया महाराणी को दृष्टि में रखकर** ही विनय की गई है कि वे पशुओं की हिंसा न होने दें।

प्रश्न 4 : पुस्तक का विषय किस भाषा में है?

उत्तर : हिन्दी भाषा में ही पुस्तक का विषय प्रस्तुत किया गया है।

प्रश्न 6 : विषय को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है?

उत्तर : इसमें पशुओं से मिलने वाले दूध एवं उनकी सन्तानों से होने वाले लाभों का औसत रूप से **मूल्यांकन व गणना की गई है कि एक पशु अपने जीवन में कितने मनुष्यों के लिए हितकारी है।** मुख्य रूप से गौ से मिलने वाले दूध से कितने लोगों का पालन-पोषण होता है, तथा उसकी सन्तान बैल से कृषि आदि में कितना लाभ होता है, सबका विस्तृत वर्णन है।

प्रश्न 6 : वृद्ध होने पर गाय अनुपयोगी हो जाती है, दूध नहीं देती व भार रूप हो जाती है। तब इनकी रक्षा की क्या आवश्यकता है?

उत्तर : महर्षि ने बड़े मार्मिक शब्दों में ऐसे गौ आदि की **तुलना वृद्ध माता-पिता के साथ करते हुए उन्हें भी संरक्ष्य माना है।** जीवन में प्रदान किये गये दुग्ध आदि लाभों के कारण वे अहिंस्य हैं, ऐसा कहा है।

प्रश्न 7 : पुस्तक में कितने अध्याय हैं?

उत्तर : यह पुस्तक निम्नलिखित **तीन भागों में** विभक्त

है, जिन्हें प्रकरण नाम दिया गया है – 1) **समीक्षा प्रकरण**, 2) **नियम प्रकरण**, और 3) **उपनियम प्रकरण**। मुख्य विषय समीक्षा प्रकरण में है।

प्रश्न 8 : नियम प्रकरण आदि से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : महर्षि ने समीक्षा प्रकरण के प्रारम्भ में '**गोकृष्यादि रक्षिणी सभा**' नामक सभा के निर्माण का उल्लेख किया है। इसका उद्देश्य गौ आदि पशुओं और कृषि आदि कर्मों की रक्षा करना था। इस सभा के जो **अधिकारी व सदस्य बनना चाहते थे**, उनके लिए अगले दो प्रकरणों में **नियमों व उपनियमों का उल्लेख किया** है।

(14)

अद्वैतमत खण्डन

प्रश्न 1 : क्या महर्षि दयानन्द ने 'अद्वैत मत' अथवा 'नवीन वेदान्त' के विरोध में कोई ग्रन्थ लिखा था?

उत्तर : हाँ, '**अद्वैतमत-खण्डन**' नामक छोटी सी पुस्तक लिखी थी।

प्रश्न 2 : यह पुस्तक किस भाषा में लिखी गई थी?

उत्तर : यह **संस्कृत भाषा में हिन्दी भाषा के अनुवाद सहित** लिखी गई थी।

卐 विस्तार के लिए देखिए 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास'— लेखक : युधिष्ठिर मीमांसक, प्रथम संस्करण, पृ.सं. 91।

प्रश्न 3 : इसका प्रकाशन और मुद्रण स्वामी जी ने कब और कहाँ से करवाया था ?

उत्तर : 'अद्वैतमत–खण्डन' नामक इस पुस्तक का प्रकाशन **वि. संवत् 1927 में** जब स्वामी जी तीसरी बार काशी पधारे थे, तब हुआ था। यह ट्रैक्ट 'कविवचन सुधा' नामक हिन्दी के मासिक पत्र में भी छपवाया गया था, जो **'लाइट प्रेस, बनारस'** में गोपीनाथ पाठक के प्रबन्ध से प्रकाशित हुआ था।

प्रश्न 4 : क्या यह पुस्तक प्रभावशाली थी ?

उत्तर : हाँ, यह पुस्तक बहुत प्रभावशाली रही। जैसा कि श्री पं. लेखराम जी द्वारा संगृहीत **'महर्षि के जीवनचरित'** के पृष्ठ 816 पर लिखा गया है —***"यह ट्रैक्ट नीवन वेदान्त के दुर्ग को तोड़ने के लिए सैनिक बल से अधिक बलवान् है। यह दूसरी बार प्रकाशित नहीं हुआ।"*** इसी प्रकार 'श्री पं. देवेन्द्रनाथ' द्वारा लिखित जीवन–चरित भाग–1, पृष्ठ 51, में उल्लेख मिलता है, ***"इस बार दयानन्द ने इसी दुर्ग नवीन वेदान्त पर गोला बरसाया और उसके खण्डन में 'अद्वैतमतखण्डन' नामक पुस्तक लिखकर प्रकाशित की।"***

प्रश्न 6 : क्या यह पुस्तक अभी उपलब्ध है ?

उत्तर : नहीं, अभी यह पुस्तक उपलब्ध नहीं है।

प्रश्न 6 : वैसे तो महर्षि पहले स्वयं भी अद्वैतवादी थे ?

उत्तर : हाँ, अपने जीवन के बहुत लम्बे समय तक महर्षि अद्वैतवादी रहे अर्थात् जीव और ब्रह्म की एकता मानते रहे। परन्तु बाद में अनुभव के आधार पर वे जीव और ब्रह्म का वास्तविक भेद मानने लग गये थे। उनके जीवन चरित्र में उल्लिखित घटनाओं से विदित होता है कि **संवत् 1924 के पूर्वार्द्ध से पूर्व ही महर्षि अद्वैतवाद विषयक विचार बदल चुके थे।**

(15)

वेदान्तिध्वान्त निवारण

प्रश्न 1 : अद्वैतवाद अथवा नवीन वेदान्त के खण्डन के लिए क्या महर्षि ने कोई अन्य ग्रन्थ भी रचा था?

उत्तर : हाँ, महर्षि ने '**वेदान्तिध्वान्त निवारण**' नामक ग्रन्थ भी नवीन वेदान्तियों अथवा अद्वैतवाद के खण्डन में लिखा था।

प्रश्न 2 : इसकी रचना 'अद्वैतमत-खण्डन' के बाद हुई या पहले?

उत्तर : 'वेदान्तिध्वान्त निवारण' की रचना महर्षि ने '**अद्वैतमतखण्डन**' के लगभग **साढ़े चार वर्ष बाद की** थी।

प्रश्न 3 : 'वेदान्तिध्वान्त निवारण' कौन से वर्ष में लिखा गया था?

उत्तर : यह ग्रन्थ **मार्गशीर्ष, संवत् 1931 में (सन् 1874)** लिखा गया होगा, क्योंकि इसकी रचना महर्षि ने अपने प्रथम बम्बई निवास काल में की थी। उनका यह निवास काल कार्तिक कृष्णा -1, सं. 1931 से मार्गशीर्ष कृष्णा 12 तक (20 अक्तूबर से 5 दिसम्बर 1874) रहा। वैसे इस पुस्तक के प्रथम संस्करण में इसका मुद्रण काल सं. 1932 वि. (सन् 1876) छपा हुआ है। इस के अनुसार, **नवसंवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 1933** (26 मार्च, सन् 1876) से पूर्व यह ग्रन्थ छप चुका था।

प्रश्न 4 : इसका प्रथम संस्करण कहां से छपा था?

उत्तर : इस पुस्तक का प्रथम संस्करण '**ओरियण्टल**

प्रेस' बम्बई से छपा था।

प्रश्न 6 : क्या इसके और संस्करण भी छपे थे ? यदि हाँ, तो कब ?

उत्तर : हाँ, इसका दूसरा व तीसरा संस्करण भी छपा था, जिसमें प्रथम संस्करण की हिन्दी भाषा की अशुद्धियों को दूर करने का प्रयत्न किया गया था। द्वितीय संस्करण **श्रावण, संवत् 1939 में** प्रकाशित हुआ।

प्रश्न 6 : यह ग्रन्थ किस भाषा में था ?

उत्तर : यह ग्रन्थ **संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में** था।

प्रश्न 7 : इस पुस्तक के लेखन में क्या विशेषता थी ?

उत्तर : पं. देवेन्द्रनाथ जी द्वारा रचित महर्षि के जीवनचरित से इस पुस्तक के लेखन के विषय में दो विशेष बातें प्रकट होती हैं :—

1) आश्चर्य की बात है कि अद्वैतवाद के खण्डन विषयक यह पुस्तक महर्षि ने **घोर अद्वैतवादी कृष्णराम इच्छाराम जी से लिखवाई।**

2) महर्षि ने इस पुस्तक का **लेखन दो ही दिनों में समाप्त** भी कर दिया था।

(16)

वेदविरुद्धमत खण्डन

प्रश्न 1 : 'वेदविरुद्धमत खण्डन' नामक ग्रन्थ में किस मत का खण्डन किया गया है?

उत्तर : इस ग्रन्थ में **वल्लभ मत का खण्डन** किया गया है। इस पुस्तक का दूसरा नाम **'वल्लभाचार्य मत खण्डन'** भी है।

प्रश्न 2 : वल्लभ मत कौन-सा था?

उत्तर : इस मत में **वल्लभ नामक पुरुष को गुरु मानकर** उनके ग्रन्थों के आधार पर आचरण किया जाता था।

प्रश्न 3 : स्वामी जी ने इसका खण्डन क्यों किया?

उत्तर : यह मत **पूर्णतः वेदविरुद्ध सिद्धान्तों का प्रतिपादक था।** वल्लभ जो मृत हो चुके हैं, उनका आचार्य होना सम्भव ही नहीं, क्योंकि जो शिष्य को कल्पसूत्र, वेदान्त सहित वेद पढ़ावे वही आचार्य हो सकता है और मरणोपरान्त पढ़ाना सम्भव नहीं। दूसरा, इस मत में **श्रीकृष्ण को भगवान माना गया है, जो कि असत्य है।** इसी प्रकार की पाखण्ड युक्त बातें इस मत में फैलाई गई थीं।

प्रश्न 4 : स्वामी जी ने इसका खण्डन किस रूप में किया?

उत्तर : इस मत के सभी **सिद्धान्तों व ग्रन्थों को लेकर,** उनमें से प्रश्न उठाकर उनका खण्डन किया।

प्रश्न 6 : इस मत के ग्रन्थ कौन-कौन से हैं?

उत्तर : 'सिद्धान्त रहस्य', 'शुद्धाद्वैतमार्तण्ड', 'सत्सिद्धान्तमार्तण्ड', 'विद्वन्मण्डन', 'अणु भाष्य',

'रस भावना', आदि ग्रन्थ इस मत के माने जाते हैं।

प्रश्न 6 : यह खण्डनात्मक ग्रन्थ किस भाषा में है?

उत्तर : यह खण्डनात्मक ग्रन्थ **गुजराती, हिन्दी** और **संस्कृत तीनों भाषाओं में है।** संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद महर्षि के शिष्य भीमसेन शर्मा जी ने और गुजराती में अनुवाद महर्षि के प्रमुख शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा ने किया।

प्रश्न 7 : यहाँ तो केवल वल्लभमत का खण्डन है, फिर 'वेदविरुद्ध मत खण्डन' यह नाम क्यों रखा गया?

उत्तर : पहले तो स्वामी जी ने वल्लभमत के सभी सिद्धान्तों का वेद एवं युक्तियों के आधार पर विस्तार से खण्डन किया है। अन्त में उन्होंने लिखा है कि जैसे **वेद और युक्ति से विरुद्ध वल्लभ का सम्प्रदाय है, वैसे ही शैव, शाक्त, गाणपत्य, सौर और वैष्णवादि सम्प्रदाय भी वेद और युक्ति से विरुद्ध ही हैं।** इस कथन से वेद के विरुद्ध सभी मतों व सम्प्रदायों का स्वत: खण्डन हो जाता है।

प्रश्न 8 : इसकी रचना महर्षि ने कब की?

उत्तर : इसकी रचना **संवत् 1931, कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या**, मंगलवार के दिन पूर्ण हो गई थी।

प्रश्न 9 : इस पुस्तक का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : महर्षि के जीवनचरित को पढ़ने से पता चलता है कि इस पुस्तक के **जबरदस्त प्रभाव के कारण** वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायियों ने अनेक बार **महर्षि के प्राण हरण का प्रयत्न** किया।

(17)

भागवत खण्डन

प्रश्न 1 : महर्षि के जीवनचरित को पढ़ने से ज्ञात होता है कि उन्होंने भागवत पुराण का बहुत खण्डन किया था। क्या इस विषय पर भी उन्होंने कोई ग्रन्थ लिखा है?

उत्तर : हाँ, उन्होंने **'भागवत-खण्डनम्'** नामक ग्रन्थ लिखा था।

प्रश्न 2 : यह खण्डन 'श्रीमद्भागवत' (वैष्णव सम्प्रदाय) के विषय में है अथवा 'देवी भागवत' विषय में?

उत्तर : यह 'भागवत-खण्डनम्' नामक ग्रन्थ **'श्रीमद्भागवत'** जो वैष्णव सम्प्रदाय का मुख्य ग्रन्थ है, उसके विषय में है।

प्रश्न 3 : इस ग्रन्थ का क्या कोई अन्य नाम भी है?

उत्तर : वैष्णव सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रन्थ होने से इसका दूसरा नाम **'वैष्णवमत खण्डन' भी** है। पं. लेखराम जी ने इसका नाम **'भड़वाभागवत'** एवं **'पाखण्डखण्डन'** भी लिखा है।

प्रश्न 4 : यह ग्रन्थ कितना बड़ा है?

उत्तर : यह एक **छोटी-सी पुस्तिका** है, **सात पृष्ठ की।**

प्रश्न 6 : इसकी रचना महर्षि ने कब की थी?

उत्तर : संवत् 1923 के आरम्भ में। यह महर्षि की दूसरी पुस्तक थी।

प्रश्न 6 : यह किस भाषा में है?

उत्तर : यह मूल पुस्तक सुन्दर **संस्कृत भाषा में** है। बाद

में श्री युधिष्ठिर मीमांसक जी ने इसका **हिन्दी भाषा में भी अनुवाद** किया।

प्रश्न 7 : क्या यह अभी उपलब्ध है?

उत्तर : हाँ, यह उपलब्ध है और ऋषि की उपलब्ध पुस्तकों में यह सर्वप्रथम रचित पुस्तक है।

(18)

शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण

प्रश्न 1 : 'शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण' नामक ग्रन्थ किस विषय पर लिखा गया है?

उत्तर : यह ग्रन्थ **सहजानन्द द्वारा प्रतिपादित स्वामी नारायण मत का खण्डन करने के लिए** लिखा गया है। इस ग्रन्थ का दूसरा नाम **'स्वामी नारायणमत खण्डन'** भी है।

प्रश्न 2 : स्वामी सहजानन्द कौन थे?

उत्तर : इस मत के अनुयायी लोग सहजानन्द को **नारायण का अवतार मानते** थे।

प्रश्न 3 : नारायण से अभिप्राय क्या है?

उत्तर : गोलोक और **वैकुण्ठ में रहने वाले** चतुर्भुज,

द्विभुज और लक्ष्मीपति ईश्वर को वे नारायण मानते हैं।

प्रश्न 4 : खण्डन किसको आधार मान कर किया गया है?

उत्तर : सहजानन्द द्वारा रचित **शिक्षापत्री के अंशों को लेकर** ही स्वामीजी ने असत्य और वेद के विरुद्ध बातों का खण्डन किया है।

प्रश्न 5 : यह पुस्तक मूलतः कौन–सी भाषा में है?

उत्तर : मूलतः **संस्कृत भाषा में** है, उसका **गुजराती अनुवाद** स्वामी जी ने किया। उसी गुजराती से **हिन्दी भाषा में भी अनुवाद** किया गया है।

प्रश्न 6 : इस ग्रन्थ का रचना काल क्या है?

उत्तर : ग्रन्थ की रचना का समाप्ति काल **संवत् 1931, पौष मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी** (13 जनवरी, सन् 1875, रविवार) का दिन है।

प्रश्न 7 : इस पुस्तक का गुजराती अनुवाद सहित प्रथम संस्करण कब और कहां से प्रकाशित हुआ था?

उत्तर : इसका गुजराती अनुवाद सहित प्रथम संस्करण **संवत् 1933 के आरम्भ में 'ओरियण्टल प्रेस' बम्बई से** प्रकाशित हुआ था।

प्रश्न 8 : पुस्तक का गुजराती अनुवाद किसने किया था?

उत्तर : इसका गुजराती अनुवाद महर्षि के प्रमुख शिष्य **श्याम जी कृष्ण वर्मा ने** किया था।

(19)

भ्रान्ति निवारण

प्रश्न 1 : ग्रन्थों के नामों के आधार पर 'भ्रान्ति-निवारण और 'भ्रमोच्छेदन' दोनों एक से ही ग्रन्थ प्रतीत होते हैं। एक ही ग्रन्थ में सब भ्रान्तियों का उत्तर नहीं दे देना चाहिए था ?

उत्तर : ये दोनों ग्रन्थ एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं। '**भ्रमोच्छेदन**' में पण्डित विशुद्धानन्द जी और राजा शिवप्रसाद जी की नासमझी से अधिकांशत: '**ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' से सम्बन्धित कुछ प्रसंगों को स्पष्ट किया गया** था। जबकि इस '**भ्रान्ति-निवारण' में वेदभाष्य सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर** दिया गया है।

प्रश्न 2 : ये प्रश्न क्यों उठाये गये थे ?

उत्तर : महर्षि दयानन्द ने संसार के उपकार के लिए सभी विद्याओं के मूलभूत वेदों के अर्थ प्राचीन ऋषियों की व्याख्या, निरुक्त तथा अन्य सत्य ग्रन्थों के प्रमाणों के आधार पर करना प्रारम्भ किया। ये अर्थ उस समय प्रचलित **सायण आदि विदेशियों के द्वारा किये गये अर्थों से विरुद्ध थे** तथा पौराणिकों के मतों का खण्डन इनसे स्वत: होता था। अत: **लोगों को वेदों के ये गौरवशाली अर्थ रास नहीं आ रहे थे।**

प्रश्न 3 : इस पुस्तक में जिन शंकाओं अथवा भ्रान्तियों का निवारण किया गया है, वे किसने उठाई थीं ?

उत्तर : इस पुस्तक में प्रस्तुत उत्तर कलकत्ता के संस्कृत कालेज के **ऑफिशियेटिंग प्रिन्सिपल पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न द्वारा उठाई गई भ्रान्तियों के हैं।**

प्रश्न 4 : क्या उस समय केवल एक ही विद्वान् था जिसने

एतत्सम्बन्धी प्रश्न किये थे, अन्य किसी ने नहीं ?

उत्तर : ऐसा नहीं है। स्वामी जी इस पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं कि, ***"इस वेदभाष्य के विषय में पहिले आर. ग्रिफिथ साहब, सी. एच. टानी और पण्डित गुरुप्रसाद आदि पुरुषों ने कहीं-कहीं अपनी सामर्थ्य के अनुसार पकड़ की थी सो उनका उत्तर अच्छे प्रकार दे दिया गया था।"*** वैसे महर्षि उस समय अपने बनाये मासिक अंकों में भी विद्वानों के समझने के लिए संकेत दे देते थे, जिससे उनको समझने में सुविधा हो और व्यक्तिगत रूप से बार-बार पूछने में महर्षि का अमूल्य समय बरबाद न हो।

प्रश्न 6 : जब महर्षि ने पहले शंकाओं का समाधान कर ही दिया था, तो फिर पुन: समाधान की क्या आवश्यकता थी ?

उत्तर : महर्षि भी बार-बार इन कामों में अपना बहुमूल्य समय खर्च नहीं करना चाहते थे, परन्तु दो बातों को लक्ष्य में रखकर उन्होंने पुन: लिखना आवश्यक समझा। महर्षि के शब्दों में, 1. ***"एक तो यह कि ईश्वरकृत सत्य विद्या पुस्तक वेदों पर दोष न आवे कि उनमें अनेक परमेश्वर की पूजा पाई जाती है,*** और 2. ***दूसरे, यह कि आगे को मनुष्यों को प्रकट हो जाये कि ऐसी-ऐसी व्यर्थ कुतर्क फिर खड़ी करके मेरा काल न खोवें।"***

प्रश्न 6 : इस पुस्तक में किस भाषा में शंकाओं का उत्तर दिया गया है ?

उत्तर : हिन्दी भाषा में ही सब शंकाओं का उत्तर है।

प्रश्न 7 : यह किस समय लिखी गई ?

उत्तर : इसका समय **संवत् 1934, कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया** (2) तिथि है।

(20)

भ्रमोच्छेदन

प्रश्न 1 : क्या भ्रमोच्छेदन भी महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित किसी ग्रन्थ का नाम है?

उत्तर : जी **हाँ,** 'भ्रमोच्छेदन' नामक ग्रन्थ भी महर्षि दयानन्द द्वारा लिखा गया था।

प्रश्न 2 : यह ग्रन्थ महर्षि ने कब लिखा था?

उत्तर : यह ग्रन्थ महर्षि दयानन्द ने **संवत् 1937, ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया तिथि** गुरुवार को पूर्ण किया।

प्रश्न 3 : यह किस भाषा में लिखा गया?

उत्तर : यह **हिन्दी भाषा** में लिखा गया ग्रन्थ है।

प्रश्न 4 : इसमें किस प्रकार के भ्रम को दूर करने का प्रयास किया गया है?

उत्तर : स्वामी दयानन्द जी के अपने शब्दों में ही, ***"अब जो राजा शिवप्रसाद जी ने स्वामी विशुद्धानन्द जी की सम्मति लिखी, ज्येष्ठ महीने में, निवेदन पत्र छपवा के प्रसिद्ध किया है, उसी के उत्तर में यह पुस्तक है।"***

प्रश्न 6 : ऐसा माना जाता है कि राजा शिवप्रसाद विद्वान् थे?

उत्तर : स्वामी दयानन्द जी की भी पहले यही धारणा थी और वे उनसे मिलना भी चाहते थे, परन्तु एक बार संवत् 1926, कार्तिक सुदी 14, गुरुवार के दिन अचानक कुछ समय के लिए स्वामी जी की उनसे बात हुई तो उनकी धारणा बदली। उनके

शब्दों में, ***"परन्तु शोक है कि जैसा मेरा प्रथम निश्चय राजा जी पर था वैसा उनको न पाया। राजा जी की वाचालता बहुत बड़ी और समझ अति छोटी देखी है।"***

प्रश्न 6 : फिर कम समझ वाले के लिए इस ग्रन्थ की क्या उपयोगिता है?

उत्तर : वस्तुतः स्वामी जी इसके माध्यम से **स्वामी विशुद्धानन्द जी को चेताना चाहते थे।** उनके अनुसार, राजा जी तो संस्कृत विद्या पढ़े ही नहीं तो उनके सामने यह लेख तो ऐसा ही है जैसे बहरे के सामने अत्यन्त निपुण गाने वाले का वीणा आदि बजाना।

(21)

अनुभ्रमोच्छेदन

प्रश्न 1 : 'भ्रमोच्छेदन' के बाद अब यह 'अनुभ्रमोच्छेदन' कौन-से ग्रन्थ का नाम है?

उत्तर : जैसा कि 'भ्रमोच्छेदन' ग्रन्थ के परिचय में बताया गया है कि महर्षि ने राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द के 'निवेदन पत्र' के उत्तर में 'भ्रमोच्छेदन' ग्रन्थ की रचना की थी। अब इसके उत्तर में राजा शिवप्रसाद जी ने पुन: '**द्वितीय निवेदन**' नामक पुस्तक प्रकाशित की, **जिसके उत्तर में यह 'अनुभ्रमोच्छेदन' नामक ग्रन्थ** लिखा गया।

प्रश्न 2 : इस ग्रन्थ की रचना कब हुई?

उत्तर : इस ग्रन्थ की रचना **संवत् 1937, फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की तिथि 4, बृहस्पतिवार** के दिन की गई।

प्रश्न 3 : कुछ लोगों का कहना है कि यह ग्रन्थ महर्षि द्वारा नहीं लिखा गया, क्योंकि इस ग्रन्थ के कुछ संस्करणों के मुख पृष्ठ तथा अन्त में पं. भीमसेन शर्मा का नाम छपा हुआ है।

उत्तर : ग्रन्थ की **रचना शैली एवं ऋषि दयानन्द के 21 अक्तूबर 1880 के पत्र से ज्ञात होता है कि यह ग्रन्थ स्वयं महर्षि ने ही लिखवाया था।*** इसका हस्तलेख भी परोपकारिणी सभा, अजमेर में सुरक्षित है, जिस पर अनेक स्थानों पर ऋषि के हाथों से संशोधन किये गये हैं। कुछ **अपरिहार्य कारणों से ऋषि के नाम का उल्लेख नहीं** हो सका।

---

* विस्तार से जानने के लिए पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी द्वारा लिखित '**ऋषि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास**' पृ. सं. 192-193 देखें।

(22)

काशी–शास्त्रार्थ

प्रश्न 1 : यह शास्त्रार्थ कब और कहाँ हुआ था ?

उत्तर : जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है यह शास्त्रार्थ **काशी,** जो कि पौराणिकों का गढ़ था, में **संवत् 1926 मि. कार्तिक सुदी 12, मंगलवार के दिन** हुआ था।

प्रश्न 2 : शास्त्रार्थ किन–किनके बीच हुआ था अथवा शास्त्रार्थ के दोनों पक्ष कौन–कौन से थे ?

उत्तर : शास्त्रार्थ **स्वामी दयानन्द सरस्वती जी तथा काशी निवासी स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती तथा बालशास्त्री** आदि पण्डितों के बीच हुआ था।

प्रश्न 3 : शास्त्रार्थ का विषय क्या था ?

उत्तर : शास्त्रार्थ का विषय **मूर्तिपूजा** था। इसमें स्वामी जी का पक्ष पाषाण मूर्तिपूजन आदि का खण्डन करना तथा काशी के पण्डितों द्वारा मूर्तिपूजा का मण्डन करना था। यह मण्डन **वेद प्रमाण के आधार पर** करना निश्चित हुआ था।

प्रश्न 4 : क्या काशी के पण्डित वेदों के आधार पर मूर्तिपूजा का मण्डन कर पाये थे ?

उत्तर : नहीं, वे कोई भी ऐसा वैदिक प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर पाये जिससे मूर्ति की पूजा करना सत्य सिद्ध हो सके। यहाँ तक कि वे **'प्रतिमा' शब्द से** अपने पक्ष को सिद्ध करना चाहते थे, वे **भी नहीं कर पाये।** अत: बाद में मूल विषय को छोड़कर वे विषयान्तर में आ गये और 'पुराण' शब्द के 'विशेषण' और 'विशेष्य' विषय पर संवाद प्रारम्भ हो गया।

प्रश्न 6 : इस विषय पर कौन–सा पक्ष विजयी हुआ ?

उत्तर : इसमें भी काशीस्थ पण्डित **'पुराण' शब्द** को **'विशेष्यवाची' (जो उनका पक्ष था) सिद्ध नहीं कर पाये,** लेकिन स्वामी दयानन्द जी ने विशेषणवाची सिद्ध कर दिया। बाद में, अपनी पराजय होती देख काशीस्थ पण्डितों ने दो पेज़ स्वामी जी के समक्ष पटक कर, वहां लिखित 'पुराण' शब्द को विशेषण सिद्ध करने के लिए कहा। स्वामी जी अभी उनको पढ़ ही रहे थे कि वे बीच में उठकर ही शोर मचाने लगे और शास्त्रार्थ समाप्त हो गया।

प्रश्न 6 : पूरे शास्त्रार्थ में विजयी कौन घोषित किया गया ?

उत्तर : वास्तव में, काशी के लोग असभ्य व्यवहार करके, अपना **स्वार्थ सिद्ध करने के लिए दयानन्द जी को पराजित घोषित करके तालियां आदि भी पीटने लगे।** यह एकदम सभ्यता विरुद्ध व्यवहार था। बाद में काशीराज के छापेखाने से छपकर भी उन्हें बदनाम करने की कोशिश की गई।

प्रश्न 7 : हो सकता है कि इस शास्त्रार्थ में स्वामी जी की ही पराजय हुई हो ?

उत्तर : इसी बात का निर्णय करने के लिए ही तो इस सम्पूर्ण शास्त्रार्थ को छापकर प्रकाशित किया गया, जिससे इसे पढ़कर सामान्य जनता भी निर्णय कर सके। इसके अतिरिक्त, इस शास्त्रार्थ के समय (संवत् 1926) से लेकर 1937 तक स्वामी जी, काशी में आकर बार–बार (छः बार) विज्ञापन लगाते रहे कि इतना होने पर भी कोई वैदिक प्रमाण एवं युक्ति के आधार पर मूर्तिपूजा को सत्य सिद्ध करना चाहे तो सभ्यता पूर्वक विचार किया जा सकता है, परन्तु कोई भी सामने न आया। स्वामी जी उपर्युक्त घटना के बाद भी पहले की भाँति ही वेदोक्त उपदेश करते रहे। **यदि काशी के पण्डित विजयी हुए थे तो उन्हें शास्त्रार्थ अथवा विचार करने के लिए सामने आना चाहिए था,**

परन्तु कोई सामने नहीं आया। इससे सिद्ध होता है कि विजय स्वामी दयानन्द जी की हुई थी। वस्तुतः सत्य की ही जीत होती है, झूठ की नहीं।

प्रश्न 8 : यह शास्त्रार्थ कहाँ से और कब प्रकाशित किया गया?

उत्तर : वैदिक यन्त्रालय से संवत् 1937 में यह शास्त्रार्थ प्रकाशित किया गया था।

प्रश्न 9 : यह पुस्तक किस भाषा में है?

उत्तर : यह **संस्कृत और हिन्दी दोनों** ही भाषाओं में लिखी गई है।

(23)

सत्यधर्म-विचार

प्रश्न 1 : क्या 'सत्यधर्म-विचार' भी किसी ग्रन्थ का नाम है?

उत्तर : वास्तव में यह एक **धर्म चर्चा** है, जो मेला चाँदापुर में बड़े-बड़े विद्वानों के बीच **सत्य के निर्णय के लिए हुई थी।** इसी चर्चा अथवा शास्त्रार्थ को बाद में मुद्रित किया गया, प्रिन्ट करवाया गया, जिससे सब लोग पढ़ सकें, और पक्षपात रहित होकर सत्य-असत्य को जान कर जीवन में सत्य को धारण करें। यह धर्म चर्चा 'ब्रह्मविचार, मेला चाँदापुर' में प्रतिवर्ष मुन्शी प्यारेलाल की ओर से हुआ करती थी।

प्रश्न 2 : यह चर्चा किन-किन मत-संप्रदायों के विद्वानों के बीच हुई?

उत्तर : यह चर्चा **आर्यों, ईसाइयों और मुसलमानों के विद्वानों के बीच** हुई थी। इसमें आर्यों की ओर से स्वामी दयानन्द और मुंशी इन्द्रमणि जी, ईसाइयों की ओर से पादरी स्काट साहब, पादरी नोविल साहब आदि पांच, और मुसलमानों की ओर से मौलवी मोहम्मद कासम साहब, सैयद अब्दुल मंसूर साहब आदि पाँच विद्वान् थे।

प्रश्न 3 : इस मेले में धर्मचर्चा कितने दिनों तक चली?

उत्तर : यह मेला **दो दिन रहा और धर्मचर्चा भी दो दिन तक चली।** स्वामी जी तो चाहते थे कि कम से कम पाँच दिन और अधिक से अधिक आठ दिन तक मेला रहना चाहिए और चर्चा होनी चाहिए। इससे सभी मतों के विचारों को अच्छी

तरह से जाना जा सकता है, परन्तु पादरी लोग दो दिन से अधिक ठहरने के लिए तैयार न हुए।

प्रश्न 4 : मेले में धार्मिक चर्चा करने का उद्देश्य क्या था?

उत्तर : मेले में धर्म चर्चा करने का उद्देश्य था कि सब लोगों के सामने अलग-अलग मतों के विचार प्रकट होने से **पक्षपात रहित होकर सभी सत्य और असत्य का निर्णय कर सकते हैं।** स्वामी जी ने कहा कि हम तीनों को उचित है कि पक्षपात छोड़कर प्रीतिपूर्वक सत्य का निश्चय करें, किसी से विरोध करना कदापि योग्य नहीं।

प्रश्न 6 : चर्चा के विषय कौन-कौन से थे?

उत्तर : चर्चा के लिए निम्न लिखित पाँच प्रश्न चुने गये थेः—

1. **सृष्टि** को परमेश्वर ने किस **चीज से, किस समय** और **किसलिए** बनाया?
2. **ईश्वर सबमें व्यापक है या नहीं?**
3. **ईश्वर न्यायकारी और दयालु किस प्रकार है?**
4. **वेद, बाइबिल और कुरान के ईश्वरोक्त होने में क्या प्रमाण है?**
5. **मुक्ति क्या है** और किस प्रकार मिल सकती है?

प्रश्न 6 : क्या सब प्रश्नों पर चर्चा हुई?

उत्तर : प्रथम प्रश्न पर तो कुछ लम्बी चर्चा हुई। प्रातः साढ़े सात से ग्यारह बजे की सभा इसी विषय पर चली। उसके पश्चात् दोपहर की सभा एक बजे प्रारम्भ हुई। तब निश्चय किया गया कि बातें बहुत और समय थोड़ा है। अतः **केवल मुक्ति विषय पर** विचार किया जाए। वह भी पूरी तरह से नहीं हो पाया था कि मौलवी साहब नमाज़ पढ़ने के लिए चले गये और चर्चा वहीं अधूरी रह गई।

प्रश्न 7 : बाद में इस चर्चा को ग्रन्थबद्ध किसने और कब

किया ?

उत्तर : महर्षि दयानन्द ने ही इसे ग्रन्थबद्ध करके विक्रम **संवत् 1937, श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में द्वादशी,** मंगलवार के दिन पूर्ण किया।

प्रश्न 8 : यह ग्रन्थ किस भाषा में है ?

उत्तर : ऋषि दयानन्द सरस्वती ने यह ग्रन्थ **हिन्दी में** ही लिखा।

प्रश्न 9 : क्या किसी अन्य भाषा में भी यह ग्रन्थ छपा था ?

उत्तर : उपर्युक्त हिन्दी वाले ग्रन्थ से पहले यह ग्रन्थ हिन्दी और उर्दू, दोनों भाषाओं में एक साथ प्रकाशित हो चुका था। इसके **बायें कालम में हिन्दी और दायें कालम में उर्दू भाषा थी।**

प्रश्न 10 : पुस्तक का यह संस्करण कब और कहाँ से छपा था ?

उत्तर : पुस्तक का यह प्रथम संस्करण था, जो वैदिक यन्त्रालय, **काशी से सं. 1937, भाद्रपद सुदी 6, शुक्रवार** (10 सितम्बर 1880) से पूर्व 'मेला चांदापुर' नाम से छपकर प्रकाशित हो चुका था।

(24)

शास्त्रार्थ–विषयक अन्य ग्रन्थ

प्रश्न 1 : महर्षि दयानन्द ने तो अपने जीवन में अनेक बार और अनेक स्थानों पर शास्त्रार्थ किये थे, परन्तु यहाँ तो केवल दो शास्त्रार्थों से सम्बन्धित पुस्तकों का ही उल्लेख है—1. काशी–शास्त्रार्थ, और 2. सत्यधर्म–विचार (मेला चाँदापुर)। क्या अन्य शास्त्रार्थों से सम्बन्धित पुस्तकें नहीं मिलतीं ?

उत्तर : यह सत्य है कि महर्षि ने अपने जीवन–काल में अनेक शास्त्रार्थ किये और वे शास्त्रार्थ के लिखित रूप को अधिक महत्त्व भी देते थे। उपरिलिखित दो शास्त्रार्थ ही अत्यधिक प्रसिद्ध और महत्त्वपूर्ण थे। इनके अतिरिक्त जिन महत्त्वपूर्ण शास्त्रार्थों का लिखित रूप में प्रकाशन हुआ है, उनका अति संक्षिप्त परिचय यहाँ संगृहीत रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है:–

(1) प्रश्नोत्तर हलधर (मूल्य–एक आना, शायद कानपुर शास्त्रार्थ से सम्बन्धित)

प्रतिपक्षी शास्त्रार्थी: पं. हलधर ओझा

स्थान : दो शास्त्रार्थ– 1. फर्रुखाबाद, 2. कानपुर

समय : 1. संवत् 1926, ज्येष्ठ शुक्ला 10–11 (19–20 जून, सन् 1869 ई.)
2. संवत् 1926, श्रावण कृष्ण 8 (31, जुलाई, 1869 ई.)

भाषा : संस्कृत

प्रकाशन : **'फर्रुखाबाद का इतिहास'** नामक ग्रन्थ में (हिन्दी भाषा में)

(2) हुगली शास्त्रार्थ

प्रतिपक्षी शास्त्रार्थी: पं. ताराचरण तर्करत्न (काशी नरेश की राजसभा के प्रतिष्ठित पण्डित)

स्थान : हुगली

समय : संवत् 1930, चैत्र शुक्ला 11, मंगलवार (8 अप्रैल, सन् 1873 ई.)

भाषा : शास्त्रार्थ संस्कृत में,

प्रकाशन : आर्यभाषा (सं. 1930 में) और बंगला भाषा में अनूदित – 'लाइट प्रेस बनारस' में

पुस्तक का नाम : प्रतिमा पूजन विचार

(3) जालन्धर शास्त्रार्थ

प्रतिपक्षी शास्त्रार्थी: मौलवी अहमद हुसैन (उर्फ वली मुहम्मद तपाखी)

स्थान : जालन्धर

समय : संवत् 1934, आश्विन बदी 2 (24 सितम्बर, 1877 सोमवार, प्रात: 7 बजे)

प्रकाशन : 'पंजाबी प्रेस', 'आर्य दर्पण' और 'वजीरे हिन्द' में क्रमश: तीन बार छपा और पश्चात् लाहौर एवं अमृतसर आर्यसमाज ने हिन्दी भाषा में छपवाया।

विषय : पुनर्जन्म और करामात।

पुस्तक का नाम : 'जालन्धर की बहस'

(4) सत्यासत्य विवेक (लिखित)

प्रतिपक्षी शास्त्रार्थी : पादरी टी. जी. स्काट

स्थान : बरेली, राजकीय पुस्तकालय

समय : संवत् 1936, भादों सुदी 7–9 (25–27 अगस्त, सन् 1879)

विषय : पहले दिन — आवागमन।

दूसरे दिन — **ईश्वर कभी देह धारण करता है या नहीं?**

तीसरे दिन — **ईश्वर अपराध क्षमा करता है या नहीं?**

पुस्तक का नाम : सत्यासत्य विवेक

प्रकाशन : प्रथम संस्करण– 1. आर्यभूषण प्रेस, शाहजहाँपुर (मूल्य चार आना) उर्दू भाषा में , सितम्बर 1879।

2. श्रीमद्दयानन्द ग्रन्थ संग्रह में, आर्यभाषा में, श्री जगत् कुमार द्वारा।
3. गोविन्द राम हासानन्द द्वारा पृथक् पुस्तक के आकार में ।
4. 'दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह'। एवं
5. 'ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन' (सं. 2039)

(5) उदयपुर शास्त्रार्थ (लिखित)

प्रतिपक्षी शास्त्रार्थी : मौलवी अब्दुल रहमान (सुपरिटेण्डेण्ट पुलिस एवं जज,

अदालत उदयपुर)

स्थान : उदयपुर

समय : 11 सोमवार; 13 बुधवार; 17 सितम्बर, रविवार

विषय : 11 सितम्बर, 1882 –

1. **इलहामी पुस्तक कौन** है

2. **सृष्टि की उत्पत्ति**

13 सितम्बर, 1882 –

1. **वेद**, 2. **प्रकृति**

17 सितम्बर, 1882 –

1. **वेद**

प्रकाशन : पं लेखराम कृत जीवनचरित में

(6) शास्त्रार्थ अजमेर

स्थान : अजमेर

समय : संवत् 1935, मार्गशीर्ष सुदी 5 (28 नवम्बर 1878; सोमवार)

प्रकाशन : **'दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह'** (रामलाल कपूर ट्रस्ट)

'ऋषि दयानन्द सरस्वती के शास्त्रार्थ और प्रवचन'

सम्पादक : डॉ. भवानी लाल भारतीय

(7) शास्त्रार्थ मसूदा (2 शास्त्रार्थ)★

प्रतिपक्षी शास्त्रार्थी : 1) जैन साधु सिद्धकरण

★इन सभी शास्त्रार्थ-सम्बन्धी प्रकाशन की विस्तृत जानकारी के लिए देखिए 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास' (लेखक युधिष्ठिर मीमांसक), एकादश अध्याय, पृष्ठ 245-269।

2) बाबू बिहारीलाल ईसाई एवं
3) राव राजा बहादुर सिंह, मसूदा

स्थान : मसूदा

समय : 1) संवत् 1938, श्रावण बदी 2
(13, जुलाई, सन् 1881; बुधवार)
2) संवत् 1938, श्रावण सुदी 4
(30, जुलाई, सन्1881; शनिवार)

प्रकाशन : 'दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह' (रा. ला. क. ट्रस्ट)
'ऋषि दयानन्द सरस्वती के शास्त्रार्थ और प्रवचन' (संपादक : डा.भवानी लाल भारतीय)

(25-44)
वेदांगप्रकाश आदि व्याकरण-विषयक 20 ग्रन्थ

प्रश्न 1 : क्या महर्षि दयानन्द ने व्याकरण से सम्बन्धित ग्रन्थों की भी रचना की थी ?

उत्तर : हाँ, महर्षि ने व्याकरण से सम्बन्धित **छोटे-छोटे 20 ग्रन्थ** अपने सहयोगी पण्डितों द्वारा लिखवाये थे, जिससे सभी लोगों में संस्कृत भाषा का प्रचार और उन्नति हो सके।

प्रश्न 2 : ये ग्रन्थ मौलिक हैं अथवा पाणिनीय अष्टाध्यायी पर आधारित हैं ?

उत्तर : ये ग्रन्थ महर्षि के **मौलिक ग्रन्थ नहीं,** अपितु अष्टाध्यायी एवं यास्कमुनि कृत ग्रन्थों पर आधारित हैं। हाँ, **'संस्कृत वाक्य प्रबोध'** नामक ग्रन्थ में संस्कृत में वार्तालाप करने के लिए व्यावहारिक वाक्यों का संग्रह **मौलिक** है।

प्रश्न 3 : व्याकरण से सम्बन्धित इन बीस ग्रन्थों के नाम बता सकते हैं ?

उत्तर : व्याकरण से सम्बन्धित इन बीस ग्रन्थों के नामों की सूची इस प्रकार है :-

(1-14) **वेदांगप्रकाश ग्रन्थमाला के चौदह भाग** (अर्थात् निम्नलिखित प्रथम चौदह ग्रन्थ 'वेदांगप्रकाश' के ही चौदह भाग हैं, जिन्हें स्वतन्त्र ग्रन्थों के रूप में लिखा गया है) :-

1. **वर्णोच्चारण शिक्षा :** (पाणिनीय-शिक्षा नामक स्वतन्त्र ग्रन्थ की व्याख्या। लेखन काल : माघ मास, संवत् 1936, प्रकाशन: फाल्गुन, सं. 1936)

2. **सन्धिविषय :** (**लेखक :** पं. भीमसेन। प्रकाशन काल : मार्गशीर्ष शुक्ला 5, सोमवार, सं. 1936)

3. **नामिक :** (**लेखक :** पं. भीमसेन। लेखन समाप्ति काल : चैत्र शु. 14, बुधवार, सं. 1938, प्रकाशन काल : ज्येष्ठ, संवत् 1938)

4. **कारकीय :** (**कारक प्रकरण** की व्याख्या। **लेखक :** पं. भीमसेन। लेखन समाप्ति काल : भाद्रपद कृष्ण 8, बुधवार, सं. 1938)

5. **सामासिक :** (**समास** की व्याख्या। **लेखक :** पं. दिनेशराम। लेखन समाप्ति काल : भाद्रपद कृष्ण 12, रविवार, सं. 1938)

6. **स्त्रैण तद्धित :** (**स्त्री व तद्धित प्रत्ययों** की व्याख्या। लेखन समाप्ति काल : मार्गशीर्ष शु. 5, शनिवार सं. 1938; मुद्रण काल : मार्ग. शु. 8, सं. 1938)

7. **अव्ययार्थ :** (संस्कृत भाषा में विशेष रूप से प्रयुक्त होने वाले **अव्ययों का अर्थ एवं प्रयोग। संशोधक :** पं. भीमसेन; मुद्रण काल : पौष कृष्ण 11, सं. 1938 से पूर्व)

8. **आख्यातिक :** (**धातुपाठ** नामक स्वतन्त्र ग्रन्थ की व्याख्या, उत्तरार्ध में अष्टाध्यायी के कृदन्त भाग की व्याख्या। यह वेदांग का सबसे बड़ा भाग है। **लेखक :** पं. दिनेश; संशोधक : पं. भीमसेन; मुद्रण काल : पौष कृष्ण 9, संवत् 1939)

9. **सौवर :** (वेदादि के मन्त्रों में प्रयुक्त होने वाले **उदात्तादि स्वरों का उल्लेख;** केवल आवश्यक सूत्रों व वार्तिकों का संग्रह। रचना काल : भाद्रपद शु. 13, सोमवार, सं. 1939; मुद्रण काल : कार्तिक कृष्ण 1, सं. 1939)

10. **पारिभाषिक :** (**'परिभाषा पाठ'** नामक स्वतन्त्र ग्रन्थ की व्याख्या। **संशोधक :** पं. ज्वालादत्त; रचना काल : आश्विन बदी 30 (अमावस्या), सं. 1939 तक तैयार हो गया था;

प्रकाशन काल : पौष कृ. 9, सं. 1939)

11. धातुपाठ : (पाणिनिमुनि कृत मूल ग्रन्थ, अन्त में अकारादि क्रम से विस्तृत धातु सूत्र के साथ। **संशोधक :** पं. ज्वालादत्त; मुद्रणकाल : कार्तिक शुदी 2, सं. 1940)

12. गणपाठ : (पाणिनि मुनि कृत मूल ग्रन्थ। संशोधक : पं. ज्वालादत्त; रचनाकाल : माघ शु. 10, सं. 1939; मुद्रण काल: श्रावण कृ. 14, सं. 1940)

13. उणादिकोष : (पाणिनि प्रणीत (?) उणादि सूत्र नामक स्वतन्त्र ग्रन्थ की सरल व सुबोध व्याख्या। **लेखक :** स्वयं ऋषि दयानन्द (संशोधक : पं. ज्वालादत्त; रचनाकाल : माघ कृ. 1, सं. 1939, प्रकाशन काल : आश्विन कृ. 3, सं. 1940)

14. निघण्टु : (यास्क मुनि कृत वैदिक कोष। संशोधन काल : मार्गशीर्ष शु. 14, सं. 1939, बृहस्पतिवार (14 दिसम्बर,1982 ई.); मुद्रण काल : आश्विन कृ. 3, सं.1940)

15. संस्कृत वाक्य प्रबोध : (प्रकाशन काल: फाल्गुन शु.11, सं.1936)

16. निरुक्त मूल

17-20. अष्टाध्यायी भाष्य—4 भाग (रचना काल : विक्रमी संवत् 1935-1936)

प्रश्न 4 : व्याकरण-सम्बन्धी इन सब ग्रन्थों को लिखने एवं लिखवाने में महर्षि का मुख्य उद्देश्य क्या था?

उत्तर : संक्षेप में, व्याकरण के इन ग्रन्थों को प्रस्तुत करने में महर्षि की मंशा थी कि वेद एवं अन्य शास्त्रों को पढ़ने वाले जन उनके **अर्थों एवं भावों को यथार्थ रूप में पढ़ व समझ सकें। गलत टीकाओं, भाष्यों एवं अर्थों को पढ़कर उनमें ही उलझ न जायें।**

प्रश्न 5 : जब अष्टाध्यायी एवं लघु सिद्धान्तकौमुदी आदि व्याकरण-सम्बन्धी ग्रन्थ पहले से ही विद्यमान थे, तो महर्षि को

'वेदांग प्रकाश' नामक नये ग्रन्थों की रचना की आवश्यकता क्यों महसूस हुई?

उत्तर : अष्टाध्यायी तो व्याकरण का मूल ग्रन्थ था ही, जिसे महर्षि पाणिनि ने रचा था। परन्तु महर्षि ने सूत्रों को विभिन्न प्रकरणों के अनुसार विभक्त करके सहज रूप में प्रस्तुत किया है। जैसे—सन्धि से सम्बन्धित सूत्रों को '**सन्धि विषय**' में, समास-सम्बन्धी सूत्रों को '**सामासिक**' में, सुबन्त प्रत्ययों को '**नामिक**' में, तिङन्त-सम्बन्धी कृदन्त प्रत्ययों को '**आख्यातिक**' में प्रस्तुत किया है। वस्तुतः महर्षि नियमित रूप से संस्कृत का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के लिए तो अष्टाध्यायी द्वारा ही अध्यापन चाहते थे, जबकि **नियमित रूप से संस्कृत का अध्ययन न कर पाने वालों, विशेषकर प्रौढ़ों** तथा अपने जीवन-निर्वाह के लिए नौकरी अथवा व्यवसाय आदि में लगे हुए **मध्यम श्रेणी के लोगों के लिए** वेदांगप्रकाश के **इन ग्रन्थों का महत्त्व व उपयोगिता थी।**

इन ग्रन्थों की सहायता से छात्रों के अतिरिक्त अन्य जिज्ञासु भी सरलता पूर्वक संस्कृत भाषा का परिचय एवं शिक्षा प्राप्त करने में समर्थ हो सकते हैं। इस दृष्टि से नामिक, आख्यातिक, पारिभाषिक, उणादिकोष एवं निघण्टु विशेष उपयोगी हैं।

प्रश्न 6 : संस्कृत वाक्य प्रबोध नामक ग्रन्थ में किस विषय को लिया गया है?

उत्तर : इस ग्रन्थ में नित्य प्रति के व्यवहार में प्रयुक्त होने वाले प्रायः सभी **सामान्य वाक्यों और शब्दों के संग्रह को संस्कृत भाषा में प्रस्तुत किया** गया है। इनसे **बोलचाल में संस्कृत भाषा का प्रचलन होने में सहायता मिल सकती** है। महर्षि ने लिखा है कि इसी प्रकार से अन्य वाक्यों की रचना भी की जा सकती है।

प्रश्न 7 : इस पुस्तक को लिखने में ऋषि का क्या प्रयोजन

था ?

उत्तर : ऋषि ने अंग्रेजी शिक्षा के दुष्परिणामों को जानते हुए हिन्दी और संस्कृत भाषा के पुनः प्रचार पर बहुत बल दिया। इसके प्रभाव से लोगों की मांग पर **संस्कृत सीखने के लिए** यह पुस्तक लिखी थी।

प्रश्न 8 : 'निरुक्तमूल' ग्रन्थ की क्या विशेषता है ?

उत्तर : आचार्य यास्क ने 'निरुक्त' नामक ग्रन्थ की रचना भाष्य सहित की थी। इसकी सहायता से ही वेदों के उचित अर्थों को जानना सम्भव है, अन्यथा नहीं। महर्षि ने **भाष्य के बिना मूल ग्रन्थ 'निरुक्त' का प्रकाशन** करवाया था। इससे इस **ग्रन्थ के पारायण में सुविधा** हो सकती है।

प्रश्न 9 : अष्टाध्यायी के भाष्य के रूप में काशिका तो पहले से ही उपलब्ध थी। फिर महर्षि ने इसका पुनः भाष्य करना क्यों आरम्भ किया ?

उत्तर : प्रथम तो हम यह जान लें कि महर्षि अष्टाध्यायी के **केवल चार अध्यायों का ही भाष्य** कर पाये थे, आठों अध्यायों का नहीं। इनमें भी बीच बीच के कुछ अंश उपलब्ध नहीं हैं। महर्षि द्वारा कृत भाष्य की अपनी विशेषताएँ हैं, जहां काशिकाकार ने अपने ढंग से अष्टाध्यायी के सूत्रों की व्याख्या की है, वहीं **महर्षि ने महाभाष्य के अनुकूल व्याख्या और उदाहरण प्रस्तुत किये** हैं। दूसरा, महर्षि ने सभी **पौराणिक उदाहरणों को हटाकर नये उदाहरण दिये हैं।***

---

*व्याकरण के इन सभी ग्रन्थों के विषय का विस्तृत परिचय प्राप्त करने के लिए देखिए पं. युधिष्ठिर मीमांसक की '**ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास**'।

(45)

गोतम–अहल्या और इन्द्र–वृत्रासुर की सत्यकथा

प्रश्न 1 : यह तो कोई पौराणिक ग्रन्थ प्रतीत होता है?

उत्तर : हाँ, गोतम और अहल्या से सम्बन्धित **कथा का वर्णन पुराणों में भी मिलता है,** जो अत्यन्त बीभत्स रूप में है। वास्तव में मूल रूप से **यह कथा ब्राह्मण-ग्रन्थों में मिलती है, जो आलंकारिक रूप में है।**

प्रश्न 2 : ब्राह्मण ग्रन्थों में यह कथा किस नाम से निर्दिष्ट है?

उत्तर : 'गोतम अहल्या और इन्द्र वृत्रासुर' नाम से यह कथा आलंकारिक रूप में ब्राह्मण ग्रन्थों में है।

प्रश्न 3 : महर्षि ने गोतम, अहल्या आदि पुरुषवाची नामों को किस रूप में लिया है?

उत्तर : महर्षि ने वर्णन किया है कि ब्राह्मण ग्रन्थों में **गोतम चन्द्रमा का, अहल्या रात्रि का, इन्द्र सूर्य का** तथा **वृत्र मेघ** (बादलों) **का** प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रश्न 4 : क्या इस घटना को महर्षि ने स्वतन्त्र ग्रन्थ के रूप में ही लिखा है?

उत्तर : वास्तव में ये दो घटनाएँ हैं — **गोतम और अहल्या की** तथा **इन्द्र और वृत्रासुर** की। इन दोनों घटनाओं के वास्तविक स्वरूप का दर्शन महर्षि ने **'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'** के **'ग्रन्थ प्रामाण्याप्रामाण्य प्रकरण'** में एवं मार्गशीर्ष शुदी

15, संवत् 1933 को वेदभाष्य के विषय में छपवाये गये विज्ञापन में भी करवाया है। हो सकता है, इस **विज्ञापन** को ही स्वतन्त्र पुस्तक मान लिया गया हो, अथवा कोई स्वतन्त्र पुस्तक भी हो, यह **निश्चित नहीं हो पा रहा।**

प्रश्न 6 : इस पुस्तक का क्या कहीं उल्लेख मिलता है?

उत्तर : हाँ, इस पुस्तक का दो-तीन स्थानों पर उल्लेख मिलता है:—

1) संवत् 1937, चैत्र में प्रकाशित **'गोकरुणानिधि' के अन्तिम पृष्ठ पर,** दो पैसे मूल्य के साथ इसका सबसे पहले उल्लेख मिलता है।

2) संवत् 1937, आषाढ़ में **यजुर्वेद भाष्य के 15वें अंक के अन्त में छपे विज्ञापन में।** एवं

3) काशी शास्त्रार्थ (संवत् 1937) और सत्यधर्म विचार (सं. 1937), ग्रन्थों में छपे **पुस्तकों के विज्ञापन में भी** इसका उल्लेख है। यहाँ इस पुस्तक का मूल्य एक आना लिखा हुआ है।

4) **महर्षि के** वि. संवत् 1939, भाद्रपद बदी 1, मंगलवार के दिन **लिखे पत्र** में इस पुस्तक की 25 प्रतियाँ प्राप्त करने का उल्लेख है। (यह पत्र **'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन'** — भाग-2; पृष्ठ 609-610 पर छपा है।)

(46)
गर्दभतापिनी उपनिषद्

प्रश्न 1 : महर्षि के जीवन-चरित से ज्ञात होता है कि वे सदा प्रसन्न रहा करते थे और अपने भाषणों के बीच में कभी-कभी श्रोताओं का मनोरंजन भी करते थे। तो क्या मनोरंजन विषयक कोई ग्रन्थ भी महर्षि ने लिखा है?

उत्तर : हाँ, उन्होंने **'गर्दभतापिनी उपनिषद्'** नामक मनोरंजन विषयक एक ग्रन्थ लिखा था।

प्रश्न 2 : क्या यह ग्रन्थ वर्तमान में उपलब्ध है?

उत्तर : नहीं, दुर्भाग्यवश इसकी कोई भी प्रति वर्तमान में उपलब्ध नहीं है।

प्रश्न 3 : तो, इस ग्रन्थ का उल्लेख कहाँ मिलता है?

उत्तर : पं. देवेन्द्रनाथ द्वारा संगृहीत महर्षि के जीवन चरित भाग-1, पृ., 279 में इस पुस्तक का उल्लेख इस प्रकार मिलता है, 'श्री स्वामी जी ने रामतापिनी और गोपालतापिनी उपनिषदों की तरह 'गर्दभतापिनी उपनिषद्' भी बना रखी थी, जिसमें से कभी वचन उद्धृत करके सुनाया करते थे।'

प्रश्न 4 : इस पुस्तक का रचना-काल क्या था?

उत्तर : उपर्युक्त वर्णन के आधार पर इस पुस्तक का रचना काल **आषाढ़ बदी 2, संवत् 1931 से पूर्व का है।**

(47)

स्वयं कथित व लिखित जीवन चरित

प्रश्न 1 : हम महर्षि दयानन्द का विभिन्न लेखकों जैसे स्वामी सत्यानन्द जी, पं. लेखराम जी, देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय आदि द्वारा लिखित जीवन-चरित पढ़ते हैं। इनकी प्रामाणिकता का आधार क्या है?

उत्तर : प्राय: सभी लेखकों द्वारा रचित महर्षि के जीवन-चरित का आधार **स्वयं महर्षि द्वारा लिखित व वर्णित उनका जीवन-चरित है।** इसी आधार पर ये जीवन चरित प्रामाणिक माने जाते हैं।

प्रश्न 2 : क्या महर्षि ने स्वयं भी अपनी आत्मकथा लिखी है?

उत्तर : महर्षि ने अपनी **आत्मकथा संक्षेप में लिखी भी** और पूना नगर में लोगों के आग्रह पर अन्तिम व्याख्यान में संक्षिप्त रूप से अपनी **आत्मकथा का मौखिक वर्णन भी किया है।** महर्षि के जीवन-चरित को समझने व जानने के लिए यह सामग्री अत्युपयोगी है। यही कारण है कि उनके जीवन-चरित को लिखते हुए प्राय: सभी लेखकों ने इस सामग्री का उपयोग किया है।

प्रश्न 3 : अपनी आत्मकथा सम्बन्धी व्याख्यान महर्षि ने कब दिया था?

उत्तर : अपनी आत्मकथा सम्बन्धी व्याख्यान महर्षि ने **4 अगस्त, 1975** को पूना नगर में दिया।

प्रश्न 4 : किन लोगों के आग्रह पर महर्षि ने आत्मकथा का व्याख्यान दिया था?

उत्तर : ऐसी महान् आत्मा के वर्तमान जीवन की उत्पत्ति, पालन-पोषण, माता-पिता एवं जीवन सम्बन्धी घटनाओं के विषय में जिज्ञासा का होना स्वाभाविक ही है। अत: अनेक लोग महर्षि से उनके जन्म स्थान, माता-पिता, शिक्षा, ब्राह्मणत्व एवं जीवन की पूर्व घटनाओं को जानना चाहते थे। जैसा कि पूना व्याख्यान में महर्षि कहते हैं, 'हमसे बहुत से लोग पूछते हैं, कि हम कैसे जानें कि आप ब्राह्मण हैं और कहते हैं कि आप अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों की चिट्ठियां मंगा दें, या आपको जो पहचानता हो, उसको बतलावें। इसीलिए मैं अपना कुछ वृत्तान्त कहता हूं।

'दूसरे देश की अपेक्षा गुजरात में कुछ मोह अधिक है। यदि मैं अपने पूर्व मित्रों तथा सम्बन्धियों को अपना पता दूं या पत्र व्यवहार करूं तो मेरे पीछे एक ऐसी व्याधि लग जायेगी जिससे कि मैं छूट चुका हूं। इस भय से कि कहीं वह बला मेरे पीछे न लग जावे, पत्रादि मंगा देने की चेष्टा नहीं करता।'

प्रश्न 6 : उपर्युक्त व्याख्यान के अतिरिक्त महर्षि ने अपनी आत्मकथा (जीवन-चरित) कब और कहाँ लिखी थी?

उत्तर : थियोसोफिकल सोसाइटी के कर्नल आल्काट महोदय के आग्रह पर महर्षि ने 'थियोसोफिस्ट पत्रिका' में अपना जीवन-चरित तीन किश्तों में लिखकर भेजा था। इसका अंग्रेजी अनुवाद क्रमश: 1) पहली किश्त (जन्म से लेकर ऋषिकेश यात्रा पर्यन्त) अक्तूबर सन् 1879 के अंक में पृष्ठ 9-12 तक, 2) दूसरी किश्त (टिहरी से जोशी मठ यात्रा तक) दिसम्बर 1879 के अंक में पृष्ठ 66-68 तक, तथा 3) तीसरी किश्त (बदरीनारायण से नर्मदा तट की यात्रा तक) नवम्बर 1880 के अंक में छपी थी।

(48)
पूना-प्रवचन (उपदेश मंजरी)

प्रश्न 1 : महात्मा आनन्द स्वामी जी की कथाओं को आधार बनाकर उन्हें अनेक पुस्तकों का रूप दिया गया है। क्या महर्षि के प्रवचनों की भी कोई पुस्तक है?

उत्तर : हाँ, महर्षि दयानन्द ने पूना में **15 व्याख्यान** दिये थे, जिन्हें पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक का नाम **'उपदेश मंजरी'** है।

प्रश्न 2 : ये व्याख्यान अथवा उपदेश महर्षि ने कब दिये थे?

उत्तर : बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना करने के पश्चात् महर्षि पूना गये, जहाँ उन्होंने **20 जून से 5 सितम्बर 1875 तक** (अर्थात् लगभग दो मास तक) निवास किया था। इसी दौरान उन्होंने ये **15 व्याख्यान** दिये थे।

प्रश्न 3 : इन दो माह के दौरान महर्षि ने क्या केवल 15 व्याख्यान ही दिये?

उत्तर : ऐसा नहीं है। विभिन्न शोधों के आधार पर ज्ञात होता है कि महर्षि ने इस दौरान **कुल 54 व्याख्यान** दिये थे, परन्तु संकलन केवल **15 व्याख्यानों** का ही हो पाया था।

प्रश्न 4 : महर्षि तो प्रायः संस्कृत में व्याख्यान देते थे। क्या यह पुस्तक भी संस्कृत में है?

उत्तर : नहीं, प्रारम्भ में कुछ वर्षों तक महर्षि संस्कृत में बोलते रहे थे, परन्तु बाद में उन्होंने हिन्दी भाषा में बोलने का अभ्यास कर लिया था। इन दिनों भी उनका हिन्दी में बोलने का अभ्यास हो चुका था। अतः ये व्याख्यान हिन्दी में होने से पुस्तक

भी हिन्दी भाषा में है।

प्रश्न 5 : क्या इस पुस्तक में महर्षि के उपदेशों का शब्दशः प्रकाशन किया गया है?

उत्तर : नहीं, जब महर्षि ने व्याख्यान दिये, तब **उनकी रिपोर्ट** प्रतिदिन वहाँ के **मराठी समाचार-पत्रों में छपती थी।** बाद में, मराठी भाषा से ही इनका **हिन्दी में रूपान्तरण** करके पुस्तक रूप में छापा गया था।

प्रश्न 6 : इनका मराठी भाषा में अनुवाद किसने किया था?

उत्तर : एक सूचना के अनुसार, इनका मराठी भाषा में अनुवाद पूना हाई स्कूल के सहायक **मुख्याध्यापक श्री गणेश जनार्दन आगाशे** ने किया था। तत्पश्चात् इनका **संग्रह और सम्पादन श्री गोविन्द रानाडे जैसे विद्वान्** ने किया।

प्रश्न 7 : इसके पश्चात् इनका हिन्दी में अनुवाद किसने किया था?

उत्तर : एक महाराष्ट्र ब्राह्मण **श्री पं. गणेश रामचन्द्र ने** इनका हिन्दी भाषा में अनुवाद किया था।

प्रश्न 8 : इनका सर्वप्रथम प्रकाशन किसने और कब करवाया था?

उत्तर : सर्वप्रथम, इनका पुस्तक रूप में प्रकाशन आर्य **प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने सन् 1983 में** करवाया था। वैसे **इससे पहले** महर्षि के जीवनकाल में ही **दिसम्बर, सन् 1881 से पूर्व, गुजराती भाषा में 'स्वामी दयानन्द सरस्वती नु भाषण'** नाम से उपरोक्त **मराठी संस्करण का प्रकाशन** हो गया था।

प्रश्न 9 : महर्षि ने पूना में ये 15 व्याख्यान किस विषय पर दिये थे?

उत्तर : महर्षि ने ये व्याख्यान भिन्न-भिन्न विषयों पर दिये

थे। इनकी सूची निम्नलिखित है :-

1. **ईश्वर सिद्धि** — दिनाँक 4 जुलाई, सन् 1875 ई. रविवार (आषाढ़ सुदी प्रतिपदा, विक्रमी संवत् 1932)।

2. **ईश्वर सिद्धि पर वाद-विवाद** — 6 जुलाई, सन् 1875 ई., मंगलवार (आषाढ़ सुदी 4, विक्रमी संवत् 1932)।

3. **धर्माधर्म** — 8 जुलाई, सन् 1875 ई., बृहस्पतिवार (आषाढ़ सुदी 6, विक्रमी संवत् 1932)।

4. **धर्माधर्म निश्चय पर शंका-समाधान** — 10 जुलाई, सन् 1875 ई., शनिवार (आषाढ़ सुदी 8, विक्रमी संवत् 1932)।

5. **वेद** — 13 जुलाई, सन् 1875 ई., मंगलवार (आषाढ़ सुदी 10, विक्रमी संवत् 1932)।

6. **पुनर्जन्म** — 17, जुलाई सन् 1875 ई., शनिवार (आषाढ़ सुदी 14, विक्रमी संवत् 1932)।

7. **यज्ञ और संस्कार** — 20, जुलाई, सन् 1875 ई. मंगलवार (श्रावण बदी 2, विक्रमी संवत् 1932)।

8-13. **इतिहास** — क्रमशः 24, 25, 27, 29 व 31 जुलाई एवं 2 अगस्त, 1875 ई.।

14. **नित्य कर्म और मुक्ति** — 3 अगस्त, सन् 1875 ई।

15. **स्वयं कथित जीवनचरित** —4 अगस्त, 1875 ई।

प्रश्न 8 : इन 15 व्याख्यानों में 6 व्याख्यान तो इतिहास पर हैं। इनमें कौन से इतिहास का वर्णन है?

उत्तर : यहाँ इतिहास शब्द से सामान्य अर्थ से भिन्न अर्थ लिया गया है। महर्षि के अनुसार, **'इतिहास नाम वृत्तम्'** इतिवृत्त अर्थात् अतीत के वर्णन को इतिहास कहा जाता है। इतिहास जगदुत्पत्ति से प्रारम्भ होकर आज के समय तक चला आता है। इस अर्थ के आधार पर महर्षि ने **'जगत् कैसे उत्पन्न हुआ और किसने उत्पन्न किया?'** जैसे दार्शनिक एवं

महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का विवेचन सांख्य दर्शन, वेद-मन्त्रों एवं उपनिषदों के आधार पर स्पष्ट एवं बहुत सुन्दर प्रकार से किया है।

प्रश्न 9 : वैसे तो जिन विषयों पर महर्षि के व्याख्यान हैं, उन विषयों का विवेचन उन्होंने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका आदि ग्रन्थों में भी किया है। फिर व्याख्यानों में क्या विशेषता है?

उत्तर : हाँ, यह सत्य है कि महर्षि ने अपने ग्रन्थों में भी इन विषयों का विवेचन किया है। परन्तु कुछ विषयों का वर्णन इन व्याख्यानों में **युक्तियों और प्रमाणों के आधार पर अधिक स्पष्ट रूप में** किया गया है, जबकि एक स्थान पर ईश्वर द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान के विषय में विरोधी विचार भी मिलता है। छठे व्याख्यान में महर्षि ने वेद ज्ञान को सृष्टि की उत्पत्ति के पांच वर्ष पश्चात् दिया गया माना है। जबकि महर्षि के स्वयं के ग्रन्थों के आधार पर यह सिद्धान्त उन्हीं के विरुद्ध है। सम्भवत: यह रिपोर्ट लेने वालों की भूल हो सकती है। ऐसे **विरोधी स्थानों में महर्षि के ग्रन्थों को ही प्रामाणिक मानना चाहिए।**

(49)

बम्बई-प्रवचन

प्रश्न 1 : महर्षि ने तो अपने जीवन काल में देश के अनेक स्थानों पर प्रवचन दिये, परन्तु प्रवचन के विषय में केवल एक ही ग्रन्थ मिलता है — **'उपदेश-मंजरी',** जिसमें पूना के 15 प्रवचनों का संग्रह है। क्या इसके अतिरिक्त किसी अन्य ग्रन्थ में उनके अन्य प्रवचन नहीं मिलते ?

उत्तर : पूना प्रवचनों की तरह एक अन्य ग्रन्थ भी है, जिसे **'बम्बई-प्रवचन'** के नाम से **'ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन'** नामक ग्रन्थ में **सन् 1982 ई. में** प्रथम बार प्रकाशित किया गया था।

प्रश्न 2 : यह किस भाषा में है ?

उत्तर : यह **हिन्दी भाषा में** है, जिसे पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने गुजराती से अनुवाद किया था।

प्रश्न 3 : इसमें ऋषि दयानन्द के कौन से प्रवचन हैं ?

उत्तर : इसमें ऋषि दयानन्द के **बम्बई में दिये गये व्याख्यान हैं,** जो उन्होंने अपने लगभग छः मास (30 दिसम्बर 1881 से 24 जून 1882 तक) के प्रवास के दौरान दिये थे।

प्रश्न 4 : इस दौरान उनके कितने व्याख्यान हुए थे ?

उत्तर : इस दौरान उनके **24 व्याख्यान** हुए थे।

प्रश्न 5 : क्या उस समय इन व्याख्यानों को रिकार्ड किया गया था ?

उत्तर : इन व्याख्यानों को **रिकार्ड तो नहीं** किया गया, परन्तु **व्याख्यानों का सार** काकड़वाड़ी बम्बई, आर्यसमाज

की तत्कालीन लिखित **'कार्यवाही संचिका' में संकलित** किया गया था, जो **गुजराती भाषा में** थी।

प्रश्न 6 : फिर इनका हिन्दी भाषा में सबसे पहले अनुवाद किसने किया और उसका प्रकाशन कब हुआ ?

उत्तर : इनका हिन्दी भाषा में अनुवाद सबसे पहले बम्बई निवासी **श्री जगदेवसिंह जी ने किया** और **प्रकाशन 'वेदवाणी'** के फरवरी-मार्च, **सन् 1982 के अंकों में** हुआ।

प्रश्न 7 : जैसा कि प्रश्न-5 के उत्तर से प्रतीत होता है कि इन व्याख्यानों का सार प्रकाशित हुआ था। तो क्या इन व्याख्यानों का विस्तृत विवरण नहीं मिल सकता ?

उत्तर : यदि परिश्रम किया जाए, तो बम्बई से गुजराती में छपने वाले **'जामे जमशेद'** और **'मुम्बई समाचार'** नामक **समाचार पत्रों की** उस समय की **पुरानी फाइलों को ढूंढ़ने पर** इन व्याख्यानों का विस्तृत विवरण मिल सकता है।

प्रश्न 8 : इसमें क्या प्रमाण है कि उपरिलिखित समाचार-पत्र उस समय इन व्याख्यानों को छापते ही थे ?

उत्तर : प्रश्न-5 के उत्तर में उल्लिखित 'कार्यवाही-संचिका' में 5 फरवरी, सन् 1882 के दिन व्याख्यान का जो सारांश दिया गया है, उसके पश्चात् लिखा है—

"........सविस्तार जानने के लिए 12 फरवरी का गुजराती का समाचार-पत्र देखें, उसमें पत्रकर्ता ने यथावत् लिखा है, उसे लोगों ने बांचा होगा।"

(**'ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास'** : लेखक—युधिष्ठिर मीमांसक, पृ. 276 से साभार उद्‌धृत) तो फिर इस क्षेत्र में हमारे विद्वानों को अवश्य ही प्रयास करना चाहिए।

(50)

पत्र एवं विज्ञापन

प्रश्न 1 : महर्षि दयानन्द का अपने जीवन में अनेक महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों, यहाँ तक कि राजा–महाराजाओं के साथ भी सम्पर्क रहा। उनके साथ उनका पत्र–व्यवहार भी चलता रहता था। क्या इन पत्रों को प्रकाशित किया गया है?

उत्तर : यह सच है कि महर्षि ने अपने जीवन–काल में विभिन्न व्यक्तियों के साथ सहस्रों बार पत्र–व्यवहार किया होगा। इन **पत्रों का संग्रह अनेक विद्वानों और महानुभावों ने किया तथा उनका प्रकाशन भी करवाया।** पत्रों के साथ–साथ ऋषि द्वारा लिखे गये विज्ञापनों को भी छपवाया गया।

प्रश्न 2 : किन–किन विद्वानों एवं महानुभावों ने इन पत्रों और विज्ञापनों का संग्रह किया था?

उत्तर : श्री पण्डित लेखराम जी, श्री महात्मा मुन्शीराम जी, श्री पण्डित भगवद्दत्त जी, श्री महाशय मामराज जी, श्री पं. चमूपति जी एम.ए. एवं **डॉ. भवानीलाल भारतीय जी**— इन सब महानुभावों एवं अनुसन्धानकर्ताओं ने इन सब पत्रों और विज्ञापनों का संग्रह किया और उनका प्रकाशन भी करवाया।

प्रश्न 3 : इन सब विद्वानों ने इन पत्रों, आदि का प्रकाशन कब और किस रूप में करवाया?

उत्तर : इन सब विद्वानों द्वारा करवाये गये प्रकाशनों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है:—

1) श्री पण्डित लेखराम जी : इन्होंने ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित तथा अन्य व्यक्तियों द्वारा उनके प्रति लिखे गये पत्रों

और विज्ञापनों के संग्रह के लिए प्रायः समस्त उत्तर भारत में भ्रमण किया था। इन्होंने इनका **प्रकाशन उर्दू भाषा में लिखे गये महर्षि के जीवनचरित में किया है।** बाद में, सं. 2028 (सन् 1971) में, इस ग्रन्थ का **हिन्दी भाषा में भी अनुवाद** प्रकाशित हुआ। इस जीवनचरित में संगृहीत इन पत्रों और दस्तावेजों की सहायता के बिना कोई भी नया लेखक महर्षि के जीवनचरित का यथार्थ उल्लेख नहीं कर सकता।

2) श्री महात्मा मुंशीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) : इन्होंने भी पं. लेखराम की तरह दोनों प्रकार के पत्रों का संग्रह करके, उनमें से कुछ को पहले **'सद्धर्म प्रचारक'** के संवत् 1966 के कुछ अंकों में प्रकाशित किया। बाद में, कुछ पत्रों को सं. 1966 में ही **'ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार'** (प्रथम भाग) नामक पुस्तक में प्रकाशित किया। इसमें अधिकतर ऋषि को भेजे गये दूसरे व्यक्तियों द्वारा लिखे गये पत्र हैं, जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। भूमिका से ज्ञात होता है कि वे दूसरा भाग भी छपवाना चाहते थे, परन्तु छपवा न सके।

3) श्री पं. भगवद्दत्त जी : इन्होंने संवत् 1975, 1976, 1983 और 1984 में क्रमशः **चार भागों में ऋषि द्वारा स्वलिखित 246 पत्रों और विज्ञापनों को प्रकाशित** किया। इसके बाद भी वे इनके संग्रह और अनुसन्धान में लगे रहे और **संवत् 2002 तक उन्होंने लगभग 500 पत्रों और विज्ञापनों को एकत्र** कर लिया। इस संग्रह को क्रम पूर्वक सम्पादित करके सं. 2002 में **'रामलाल कपूर ट्रस्ट, लाहौर'** द्वारा 20×30 अठपेजी आकार की 550 पृष्ठों में छपवाकर प्रकाशित किया गया था।

4) श्री महाशय मामराज जी : ऋषि दयानन्द के इस अनन्य दीवाने भक्त के अथक परिश्रम और सहयोग से ही पं. भगवद्दत्त जी **उपरिलिखित संग्रह और प्रकाशन** कर पाये थे।

5) श्री पं. चमूपति जी एम. ए. : इन्होंने ठाकुर किशोरी सिंह जी से ऋषि दयानन्द के पत्र–व्यवहार का अमूल्य संग्रह प्राप्त किया था, जिसमें **लगभग 172 पत्र** थे। ये **पत्र महर्षि के अन्तिम समय के थे,** जो राजस्थान के विशिष्ट व्यक्तियों से सम्बद्ध हैं, **अतः अति महत्त्वपूर्ण हैं।**

6) श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक : ऊपर लिखित पं. भगवद्दत्त जी द्वारा संगृहीत और रामलाल कपूर ट्रस्ट लाहौर द्वारा 2002 में प्रकाशित संग्रह सन् 1947 में देश विभाजन के समय जला दिया गया था। भाग्यवश, इसकी कुछ प्रतियाँ सुरक्षित रहीं। सन् 1953 के अन्त में इनके पुनः प्रकाशन व सम्पादन की जिम्मेवारी पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने ग्रहण की। उनके परिश्रम के फलस्वरूप **सन् 1955 में 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन'** का दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ। इसमें **पत्रों की संख्या 500** से **बढ़कर 680** हो गई थी। मीमांसक जी ने इन पत्रों से सम्बद्ध अनेक परिशिष्ट व टिप्पणियाँ भी लिखी थीं, जो ग्रन्थ के बड़े आकार के कारण उसमें न छप सकी थीं। बाद में, वेदवाणी में क्रमशः छापे गये थे।

इस द्वितीय संस्करण के बाद, **तृतीय संस्करण छापा गया, जो एक बृहत् संस्करण** था। यह **चार भागों में** प्रकाशित हुआ। पहले (सन् 1980 में प्रकाशित) और दूसरे भाग (सन् 1981) में **'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन'** हैं, तथा तीसरे (सन् 1982) और चौथे भाग (सन् 1983) में **'ऋषि दयानन्द के प्रति लिखे गये'** पत्र और विज्ञापन हैं।

प्रश्न 4 : जबकि ऋषि दयानन्द के अन्य ग्रन्थ विद्यमान हैं, तो इन पत्रों और विज्ञापनों के संग्रह एवं प्रकाशन के लिए इतना अधिक परिश्रम क्यों किया गया ?

उत्तर : किसी भी महापुरुष के जीवन, उसकी विचारधारा एवं महत्ता को जानने के लिए ग्रन्थों से अधिक उसके द्वारा लिखे

गये पत्रों का महत्त्व एवं उपयोग होता है। ये पत्रादि अलग–अलग व्यक्तियों, परिस्थितियों, समस्याओं एवं क्रियाकलापों से सम्बद्ध होते हैं, **जिनमें व्यक्ति अपने विचारों, चिन्तन, समाधानों आदि का प्रकटीकरण बहुत ही स्पष्ट और सरल रूप से करता है।** इस प्रकार का स्पष्टीकरण उसी लेखक के अपने ग्रन्थों में भी नहीं हो सकता। **अतः पत्रों का महत्त्व ग्रन्थों की अपेक्षा कहीं अधिक होता है।** यही कारण है कि ऋषि दयानन्द के पत्र–व्यवहार को पढ़कर हमें ऐसे महत्त्वपूर्ण विषयों और घटनाओं का ज्ञान होता है, जिनके बारे में उनके द्वारा रचित ग्रन्थों और उनके जीवनचरितों से कुछ भी ज्ञात नहीं होता।*

---

* इन पत्रों के महत्त्व के विषय में विस्तार से जानने के लिए **पं. भगवद्दत्त द्वारा सम्पादित पत्रों की भूमिका** को पढ़ें।

(51)

महर्षि द्वारा लिखित एवं लिखवाये गये अप्रकाशित ग्रन्थ

महर्षि दयानन्द सरस्वती के कुछ ग्रन्थ ऐसे भी हैं, जो छापे नहीं गये थे। इन अमुद्रित ग्रन्थों की सूची निम्नलिखित है–

1. ऋग्वेद मन्त्र सूची
2. यजुरथर्व मन्त्र सूची
3. अथर्वमन्त्र सूची
4. अकारादि क्रम से चार वेद और ब्राह्मणों की सूची
5. निरुक्तादि विषय सूची
6. ऐतरेय ब्राह्मण सूची
7. शतपथ ब्राह्मण सूची
8. तैत्तिरीयोपनिषद् मिश्रित सूची
9. ऋग्वेद विषयस्मरणार्थ सूची
10. निरुक्तशतपथमूल सूची
11. शतपथ ब्राह्मण सूची
12. धातुपाठ सूची
13. वार्तिक संकेत सूची
14. निघण्टु सूची
15. कुरान सूची
16. बाइबल सूची
17. जैन धर्म सूची

यह सूची वैदिक यन्त्रालय की सन् 1991–93 की प्रकाशित सम्मिलित रिपोर्ट में वहाँ विद्यमान अमुद्रित पुस्तकों की है। इस सूची में पहले नं. पर '**चतुर्वेद विषय सूची**' नामक पुस्तक का नाम है, परन्तु इस पुस्तक को बाद में परोपकारिणी सभा ने सं.

2028 में छपवा दिया गया था। अतः उस सूची में 17 के स्थान में 18 संख्या है।

'**परोपकारिणी सभा**' की संवत् 1942 (सन् 1885) की '**आवेदन**' नामक रिपोर्ट में कुछ अन्य अमुद्रित पुस्तकों का भी उल्लेख है, जो निम्नलिखित हैं —

19. 44 वार्तिक सभाष्य
20. 73 मनुस्मृति के उपयोगी श्लोकों का संग्रह
21. 74 विदुरप्रजागर के उपयोगी श्लोकों का संग्रह
22. 81 ओषधियों का यादी पत्र, स्वामी जी के लिखे हुए
23. 83 कुरान हिन्दी भाषा में अनुवाद, स्वामी जी का बनाया हुआ
24. 94 प्राकृत भाषा का संस्कृत भाषा के साथ अनुवाद अस्त व्यस्त
25. 95 जैन फुटकर श्लोकों का संग्रह स्वामी जी कृत
26. 96 रामसनेही मत गुटका

श्री पं. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु की डायरी में अमुद्रित हस्तलिखित पुस्तकें निम्नलिखित हैं:-

1. चतुर्वेद विषय सूची
2. ऐतरेय ब्राह्मण सूची
3. शतपथ विषय सूची
4. ऋग्वेद विषय सूची
5. अथर्वकाण्ड 19-20 विषय सूची
6. ऐतरेयोपनिषद् विषय सूची
7. छान्दोग्योपनिषद् सूची पत्र
8. इन्जील की सूची
9. कुरान की सूची
10. जैनमत श्लोक
11. ऋग्वेद-सूक्त सूची
12. शतपथ श्लिष्ट प्रतीक सूची

13. निरुक्त–शतपथ की मूल सूची
14. कुरान मूल हिन्दी
15. वार्तिकपाठ—आठों अध्यायों का
16. महाभाष्य का संक्षेप

इन उपरिलिखित पुस्तकों के अतिरिक्त **'ऋग्वेद के 61 सूक्तों का बृहद् भाष्य'** भी अप्रकाशित ग्रन्थ है, जिसका उल्लेख उपर्युक्त दोनों सूचियों में नहीं है।

प्रश्न 1 : जब ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के 62 वें सूक्त के दूसरे मन्त्र तक का पूरा भाष्य उपलब्ध और प्रकाशित है, तो इन 61 सूक्तों के अलग से प्रकाशित न होने से भी क्या हानि है?

उत्तर : इन अप्रकाशित 61 सूक्तों का भाष्य इस सम्पूर्ण भाष्य से पृथक् है। जैसा कि **'वेद भाष्य के दो नमूनों'** में उल्लेख किया गया है कि दूसरे नमूने में ऋषि के प्रथम सूक्त के प्रत्येक मन्त्र के दो–दो अर्थ (भौतिक और पारमार्थिक) विस्तृत रूप में किये गये थे। उसी प्रकार से इन अगले **61 सूक्तों का दोनों प्रकार से विस्तृत अर्थ महर्षि ने किया था।** इसे ऋग्वेद का **बृहद् भाष्य** कहा जा सकता है। यह **अप्रकाशित भाष्य सामान्य वेदभाष्य से अलग ढंग** का है। अतः बहुत महत्त्वपूर्ण है।

प्रश्न 2 : क्या यह कहीं पर सुरक्षित है?

उत्तर : हां, यह परोपकारिणी सभा के संग्रह में सुरक्षित है। पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी के **'ऋषि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास'** नामक ग्रन्थ के पृ. 289 में दिये गये उल्लेख से भी पता चलता है कि उन्होंने इस भाष्य को पढ़ा व इसके महत्त्व को समझा था।

प्रश्न 3 : क्या उपरिलिखित सूचियों में उल्लिखित सभी अप्रकाशित ग्रन्थ सुरक्षित हैं?

उत्तर : यह तो अनुसन्धान एवं श्रमजन्य कार्य है कि

परोपकारिणी सभा में इन ग्रन्थों को खोजा जाए और उनकी उपलब्धि और अनुपलब्धि को जाना जाए। वैसे पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी द्वारा रचित 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास' के चतुर्दश (14वें) अध्याय में **'कुरान का हिन्दी अनुवाद', 'शतपथ श्लिष्ट प्रतीक सूची'; 'निरुक्त- शतपथ की मूल सूची'; 'वार्तिकपाठ संग्रह', 'महाभाष्य का संक्षेप'** (ये दूसरी सूची में क्रमशः 14, 12, 13, 15 और 16 संख्या पर उल्लिखित हैं) **का संक्षिप्त परिचय मिलता है।** इससे ज्ञात होता है कि कम से कम ये ग्रन्थ तो सुरक्षित होने चाहिए।

प्रश्न 4 : क्या महर्षि के काल तक कुरान एवं बाइबिल के हिन्दी अनुवाद उपलब्ध नहीं थे?

उत्तर : महर्षि के काल में **बाइबिल का हिन्दी अनुवाद तो मिलता था, जो पादरियों ने किया था।** मुसलमानों के इस्लाम की समीक्षा के लिए कुरान का हिन्दी अनुवाद आवश्यक था। क्योंकि ऋषि उर्दू अथवा अरबी या फारसी का ज्ञान नहीं रखते थे। अतः **उन्होंने संवत् 1935 (1878 ई.) में हिन्दी में कुरान का अनुवाद करवाया था।** इससे पहले सन् 1877 ई. में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी कुरान का अनुवाद किया था, परन्तु वह सम्पूर्ण कुरान का नहीं, अपितु प्रारम्भ के थोड़े से भाग का ही था। इसलिए पूरे कुरान का हिन्दी अनुवाद कराना आवश्यक था।

प्रश्न 6 : ऋषि ने यह अनुवाद किससे करवाया था?

उत्तर : यह विदित नहीं हो पाया है, परन्तु अनुवाद के **संशोधन करने वाले महाशय का नाम मुन्शी मनोहरलाल जी रईस** (गुडहट्टा पटना निवासी) था। यह पत्रों आदि प्रमाणों से स्पष्ट है।

परिशिष्ट–I

पुस्तक में वर्णित ग्रन्थों की अकारादिक्रम से सूची

क्रम सं.		पृष्ठ संख्या
1.	अद्वैतमत खण्डन	31
2.	अनुभ्रमोच्छेदन	44
3.	–6. अष्टाध्यायी भाष्य—4 भाग (व्याकरण विषयक 20 ग्रन्थों में)	56
7.	आत्मचरित	64
8.	आर्याभिविनय	23
9.	आर्योद्देश्यरत्नमाला	26
10.	ऋग्वेद भाष्य	7
11.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	5
12.	काशी शास्त्रार्थ	45
13.	गर्दभतापिनी उपनिषद् (अनुपलब्ध)	63
14.	गोकरुणानिधि	29
15.	गोतम–अहल्या और इन्द्र–वृत्रासुर की सत्यकथा	61
16.	चतुर्वेद विषय सूची	9
17.	निघण्टु (व्याकरण विषयक 20 ग्रन्थों में वर्णित)	56
18.	निरुक्त (व्याकरण विषयक 20 ग्रन्थों में वर्णित)	56
19.	पंचमहायज्ञविधि	22
20.	पत्र एवं विज्ञापन	72
21.	पूना प्रवचन (उपदेश मंजरी)	66
22.	बम्बई प्रवचन	70

23.	भागवत खण्डन	37
24.	भ्रमोच्छेदन	42
25.	भ्रान्ति निवारण	40
26.	महर्षि के अप्रकाशित ग्रन्थ	76
27.	यजुर्वेद-भाष्य	7
28.	वेदभाष्य के दो नमूने	11
29.	वेदविरुद्धमत खण्डन	35
30.	-43.वेदांगप्रकाश के 14 भाग (व्याकरण विषयक 20 ग्रन्थों में)	56
44.	वेदान्तिध्वान्त निवारण	33
45.	व्यवहारभानु	27
46.	शास्त्रार्थ-विषयक अन्य ग्रन्थ	51
47.	शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण	38
48.	सत्यधर्म विचार या मेला चाँदापुर	48
49.	सत्यार्थप्रकाश	14
50.	सन्ध्या की पुस्तक	3
51.	संस्कार-विधि	19
52.	संस्कृतवाक्य प्रबोध (व्याकरण विषयक 20 ग्रन्थों में)	56

परिशिष्ट–II

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित**
   — लेखक : पं. लेखराम

2. **महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित (भाग-2)**
   — मूल लेखक : श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय
   — अनुवादक : कविराज रघुनन्दन सिंह 'निर्मल'
   प्रकाशक : आर्यसमाज नया बांस, दिल्ली-110006

3. **महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित**
   — लेखक : पं. घासीराम (एम.ए., एल.एल.बी., एडवोकेट, मेरठ)
   प्रकाशक : आर्य सहित्य मण्डल लिमिटिड, अजमेर

4. **दयानन्दीय लघु ग्रन्थ संग्रह**
   — लेखक : पं. युधिष्ठिर मीमांसक
   प्रकाशक : रामलाल कपूर ट्रस्ट

5. **ऋषि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास**
   — लेखक : पं. युधिष्ठिर मीमांसक
   प्रकाशक : रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत (हरियाणा)

6. **ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन (4 भाग)**
   — प्रकाशक : रामलाल कपूर ट्रस्ट

परिशिष्ट–III

सहायक ग्रन्थ सूची

1. **दयानन्द लघु ग्रन्थ-संग्रह**
(महर्षि दयानन्द की 13 पुस्तकों का संग्रह)
– प्रकाशक : तिलकराज आर्य प्रकाशन,
814, कुण्डेवालान अजमेरी गेट, दिल्ली

2. **ऋषि-दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास**
(दयानन्द-बलिदान शताब्दी-संस्करण)
– लेखक : युधिष्ठिर मीमांसक
– प्रकाशक : युधिष्ठिर मीमांसक,
रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत (हरियाणा)

3. **सत्यार्थप्रकाश**

4. **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**

5. **संस्कारविधि**

6. **उपदेश मंजरी**

महर्षि की कलम से.....

''इस मेरे कर्म से यदि उपकार न मानें तो विरोध भी न करें क्योंकि मेरा तात्पर्य किसी की हानि या विरोध करने में नहीं, किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने कराने का है। इसी प्रकार सब मनुष्यों को न्यायदृष्टि से वर्तना अति उचित है। मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य के निर्णय करने कराने के लिए है; न कि वाद-विवाद विरोध करने कराने के लिए। इसी मत-मतान्तर के विवाद से जगत् में जो-जो अनिष्ट फल हुए, होते हैं और होंगे उनको पक्षपात-रहित विद्वज्जन जान सकते हैं।''

(सत्यार्थप्रकाश–अनुभूमिका)

''परन्तु क्या करूँ मैं तो अपना तन-मन-धन सब सत्य के ही प्रकाशार्थ समर्पण कर चुका। मुझसे खुशामद करके अब स्वार्थ का व्यवहार नहीं चल सकता, किन्तु संसार का लाभ पहुँचाना ही मुझको चक्रवर्ती राज्य के तुल्य है।''

(भ्रान्ति-निवारण–भूमिका)